Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 37

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

21 मुहर्रम 1442 हिजरी कमरी 10 तबूक़ 1399 हिजरी शमसी 10 सितम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

यदि तुम मेरा अनुकरण करोगे तो अपने अन्दर के बुतों को तोड़ने के योग्य हो जाओगे।

इन्सान का सीना नूरों का स्त्रोत है और इसी कारण से वह बैतुल्लाह कहलाता है। बड़ा काम यही है कि इस में जो बुत हैं वे तोड़े जाएं

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मेरा अनुकरण करो और मेरे पीछे चले आओ

अत: इस ख़ुदा के घर को बुतों से पवित्र तथा साफ़ करने के लिए एक जिहाद की आवश्यकता है और इस जिहाद का मार्ग मैं तुम्हें बताता हूँ और विश्वास दिलाता हूँ। अगर तुम इस का अनुकरण करोगे तो उन बुतों को तोड़ डालोगे और यह मार्ग मैं अपना स्वंय का बनाया हुआ नहीं बताता बल्कि ख़ुदा ने मुझे मामूर किया है कि मैं बताऊं। और वह राह क्या है? मेरा अनुकरण करो और मेरे पीछे चले आओ। यह आवाज़ नई आवाज़ नहीं है। मक्का को बुतों से पवित्र करने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी कहा था कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आले इम्रान:32) इसी तरह पर अगर तुम मेरा अनुकरण करोगे तो अपने अंदर के बुतों को तोड़ डालने के योग्य हो जाओगे। और इस तरह पर सीना को जो विभिन्न प्रकार के बुतों से भरा पड़ा है पवित्र करने के योग्य हो जाओगे। तज़्किया नफ़्स के लिए चिल्ला किश्यों की आवश्यकता नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने चिल्ला कशियां नहीं की थीं। अर्रह और नफ़ी तथा इसबात इत्यादि के ज़िक्र नहीं किए थे, बल्कि उनके पास एक और ही चीज़ थी। वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन में लीन थे। जो नूर आप में था वह इस इताअत की नाली में से होकर सहाबा के हृदय पर गिरता था और अल्लाह के अतिरिक्त विचारों के टुकड़े टुकड़े करता जाता था। अन्धेरे के स्थान पर उन सीनों में नूर भरा जाता था। इस समय भी ख़ूब याद रखो वही अवस्था है। जब तक कि वह नूर जो ख़ुदा की नाली में से आता है तुम्हारे हृदय पर नहीं गिरता तज़्किया नफ़्स नहीं हो सकता। इन्सान का सीना नूरों का स्त्रोत है और इसी कारण से वह बैतुल्लाह कहलाता है। बड़ा काम यही है कि इस में जो बुत हैं वे तोड़े जाएं और अल्लाह ही अल्लाह रह जाए। हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अलल्लाहो अलल्लाहो फ़ी असुहाबी। मेरे सहाबा रज़ि के दिलों में अल्लाह ही अल्लाह है। दिल में अल्लाह ही अल्लाह होने से यह अभिप्राय नहीं कि इन्सान वहदत वजूद के मामला पर अनुकरण करे और हर कुत्ते और गधे को अल्लाह की पनाह ख़ुदा ठहरा दे। नहीं नहीं। इस से मूल उद्देश्य यह है कि इन्सान का जो काम हो उस में मूल लक्ष्य अल्लाह तआला ही की रज़ा हो और न कुछ और। और यह स्तर प्राप्त नहीं हो सकता जब तक ख़ुदा तआला का फ़ज़ल शामिल न हो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 167 से 170 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आज़ान का महत्व और बरकतें

हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

(यह इमाम)तुमको नमाज़ पढ़ाते हैं। अगर ठीक पढ़ेंगे तो तुम्हें सवाब होगा और अगर ग़लती करेंगे तो भी तुम्हें सवाब होगा और उन को वबाल।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल अज़ान, बाबो इज़ा लम यितम्मुल इमाम)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे। फिर वापस जाकर अपनी क़ौम की इमामत किया करते।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल आज़ान इज़ा, तौलुल इमाम)

हज़रत अब्बू हुरैरा रज़ी अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

तुम में से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो चाहिए कि वह हल्की पढ़ाए क्योंकि उनमें कमज़ोर और बीमार और बूढ़े भी होते हैं और जब तुम में से कोई अकेला नमाज़ पढ़े तो जितनी चाहे लम्बी करे।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल आज़ान, बाब इज़ा सल्ला ले नफ़सेही फ़ल यतौल मा शाआ)

कोई हिन्दू सिख या ईसाई मुसलमानों की मस्जिद में अपने ढंग से अल्लाह तआला की इबादत करना चाहे तो किसी मुसलमान को उसे रोकने का हक़ नहीं।

क़ुरआन मजीद की आयत وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ की तफसीर में हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब खलीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

"अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो व्यक्ति मस्जिदों में अल्लाह तआला का नाम न लेने दे और उस की इबादत से लोगों को रोके और इस तरह उन को वीरान करने की कोशिश करे वह सबसे अधिक ज़ालिम है। यह कैसी उच्च स्तर की शिक्षा है जो इस्लाम ने प्रस्तुत की है। उसे सामने रख लो दुनिया का कोई धर्म इस के सामने नहीं ठहर सकेगा। मुसलमानों का कर्म जाने दो बल्कि इस आदेश और शिक्षा को देखो। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि किसी का हक़ नहीं कि ज़िक्रे इलाही से किसी को रोके। अगर कोई व्यक्ति मस्जिद में जाकर ज़िक्रे इलाही करना चाहे या अपने तरीक़ा से अल्लाह तआला की इबादत करना चाहे तो इस से रोकना बिल्कुल नाजायज़ है। कोई हिंदू सिख या ईसाई आ जाए और मुसलमानों की मस्जिद में अपने तरीके से अल्लाह तआला की इबादत करना चाहे तो किसी मुसलमान को उसे रोकने का हक़ नहीं। अगर कोई कहे कि बाजा बजाना और नाचना उन की इबादत में शामिल है तो हम कहेंगे कि यह काम वह बाहर कर लें। जितना हिस्सा ज़िक्रे इलाही का है वह मस्जिद में

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-17)

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर, तथा ग़ायब का पढाना प्यारे अक़ा की शफकत की झलक, तथा फैमली मुलाकातें

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

18 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक जुमअतुल मुबारक)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 7 बजे तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों के पूरा करने में व्यस्तता रही।

आज जुम्अतुल मुबारक का दिन था। नमाज़-ए-जुम्अ: के लिए "बैयतुस्सुबूह" फ्रैंकफ़र्ट से 53 किलो मीटर के दूरी पर स्थित शहर गीज़न Giessen) के Fair Hall में प्रबन्ध किया गया था। इस स्थान का कुल क्षेत्रफल 44 हज़ार वर्ग मीटर है। जिसमें से 8750 वर्ग मीटर हाल की शक्ल में है इस Fair Hall के कुल 7 हाल हैं। जहां विभिन्न प्रोग्राम आयोजित होते हैं।

आज नमाज़ जुम्अ: के लिए जमाअत ने पाँच हाल प्रयोग किए। दो हाल मर्दों के लिए विशेष थे जब कि तीन हाल औरतों के लिए विशेष किए गए थे।

जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से लोग ,मर्द तथा औरतें सुबह से ही यहां पहुंचना शुरू हो गए थे। प्रत्येक की इच्छा थी कि अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ जुम्अ: अदा करने का सौभाग्य पाए।

जर्मनी की 210 जमाअतों से लोग तथा औरतें जुम्अ: में शिरकत के लिए पहुंचे थे। उनमें से कई बड़ी लम्बी और दूरी के सफ़र तय करके यहां पहुंचे थे। जमाअत Herford से आने वाले 230 किलो मीटर और आंख से आने वाले 245 किलोमीटर, Hannover से आने वाले 300 किलो मीटर Freiburg से आने वाले 330 किलो मीटर और जमाअत Chemnitz से आने वाले लोगों 345 किलो मीटर की दूरी तय करके पहुंचे थे। जब किAugsburg से आने वाले 420 किलो मीटर और हिमबर्ग से आने वाले 450 किलो मीटर ,महदी आबाद से वाले 480 किलो मीटर और जमाअत Simbach Am Inn से आने वाले लोग 540 किलो मीटर का लम्बा सफ़र तय करके अपने प्यारे आक़ा के अनुकरण में नमाज़ जुम्अ: अदा करने के लिए पहुंचे थे। फिर इतना ही सफ़र तय करके यह सब लोग वापस भी गए।

रजिस्ट्रेशन विभाग के अनुसार नमाज़ जुम्अ: में शामिल होने वाले लोगों और औरतों की कुल संख्या 5171 थी। प्रोग्राम के अनुसार दोपहर 1 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ बैयतुस्सुबूह से रवाना हुए और क़रीबन 40 मिनट के सफ़र के बाद fair hall गीज़न में पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के कुछ देर अस्थायी क़ियाम के लिए यहां एक स्थान प्रबन्ध किया गया था 2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अ: MTA इंटरनेशनल पर सीधा सारी दुनिया में प्रसारित हुआ। ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई।

प्यारे आक़ा की शफ़क़त की एक झलक

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ हाल से बाहर तशरीफ़ ला रहे थे तो हाल के दरवाज़े पर एक दोस्त आदरणीय नईम अहमद भट्टी साहिब अपने बच्चे प्रिय अब्दुर्रहमान को अपने साथ लेकर खड़े थे। उनके बच्चे का हार्ट ट्रांसप्लांट होना है। इलाज के विभिन्न औज़ार बच्चे के साथ अटैच (attach) थे।

हुज़ूर अनवर ने स्नेह करते हुए बच्चे के पास खड़े हो गए। हाल पूछा और दुआ दी "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए और शिफ़ा दे" हुज़ूर अनवर ने मज़ाक़ करते हुए फ़रमाया इसे शेर का दिल लगा दें।

इसके बाद 3 बजकर 20 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ यहां से बैयतुस्सबूह रवाना हुए और 50 मिनट के सफ़र के बाद 4 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ बैयततुस्सबूह तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अपनी रिहाइश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमली मुलाक़ातें

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमली मुलाक़ातें शुरू हुईं, आज शाम के सैशन में 25 फ़ैमलीज़ के 89 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वालीं यह फ़ैमलीज़ जर्मनी की विभिन्न 25 जमाअतों से आई थीं। कई फ़ैमलीज़ बड़ा लम्बा सफ़र तय करके मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं।

जमाअत Leverkusen से आने वाले 220 किलो मीटर Paderborn से आने वाले 255 किलो मीटर Ulm-Donau से आने वाले 300 किलो मीटर,जमाअत Osna-bruck से आने वाले 315 किलो मीटर और जमाअत Chemnitz से आने वाले लोग और फ़ैमिलीज़ 400 किलो मीटर का लंबा सफ़र तय करके आए थे।

इन सभी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने स्नेह करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान कीं। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बजे तक जारी रहा।

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर आदरणीय मिर्ज़ा अब्दुल हमीद साहिब मरहूम की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और इसके साथ पाँच मरहूमीन की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई।

आदरणीय मिर्ज़ा अब्दुल हमीद साहिब 13 अक्तूबर को जर्मनी में 73 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। अपनी 10 वर्ष की बीमारी से पहले आप जमाअत के जलसों और मर्कज़ी प्रोग्रामों में शामिल होते रहे चन्दे भी समय पर अदा करते रहे। अच्छे अख़लाक़ और मिलनसार शख़्सियत के आदमी थे। मरहूम ने अपने पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त एक बेटा और चार बेटियां छोड़ी हैं।

नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

(1) आदरणीय अब्दुल हफ़ीज़ ख़ान साहिब

ने 90 साल की उम्र में 16 अक्तूबर को रब्वाह में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम आदरणीय अब्दुल करीम साहिब के बेटे, आदरणीय अब्दुस्सत्तार साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला कोलम्बिया के बड़े भाई थे और आदरणीय हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब के मामू थे। मरहूम ने एक साल सदर अन्जुमन अहमदिया में बतौर मुहासिब और दस साल तक अपने हलक़ा में बतौर सेक्रेटरी माल सेवा की। बीमारी तक आप बाक़ायदगी से मस्जिद में जा कर जमाअत के साथ नमाज़ें अदा करते रहे। मरहूम मूसी थे और पीछे रहने वालों में 2 बेटे और 6 बेटियां छोड़ी हैं।

(2) आदरणीया सलीमा बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय मौलवी मुहम्मद इस्माईल असलम साहिब वाक़िफ़े ज़िन्दगी मरहूम (पैंशनर तहरीक जदीद दारुल-उलूम ग़र्बी सादिक़ रब्वाह)

31 अगस्त 2019 ई को 87 साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मौलवी फ़ज़लुद्दीन साहिब रज़ि (आफ़ मांगट ऊंचे। साबिक़ मुबल्लिग़ हैदराबाद दक्कन बिहार) की बेटी थीं। नमाज़ रोज़ी की पाबन्द , तहज्जुद अदा करने वाली ,

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

साल 20-2019 ई के दौरान जमाअत अहमदिया पर नाज़िल होने वाले फज़्लों का संक्षिप्त वर्णन।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत की तरक़्क़ी का क़दम आगे ही बढ़ा है।

आप का दावा केवल दावा ही नहीं बल्कि अल्लाह तआला की सहायता तथा समर्थन आप के साथ और आप की जमाअत के साथ हैं और दुनिया की कोई शक्ति नहीं जो इस तरक़्क़ी को रोक सके।

सारी दुनिया में पाकिस्तान के अतिरिक्त 288 नई जमाअतों की स्थापना। 1040 स्थानों पर पहली बार अहमदियत की स्थापना। 217 नई मस्जिदों की तामीर जबकि 93 बनी बनाई मस्जिदें जमाअत को प्राप्त हुईं। 97 मिशन हाऊसज़ तब्लीग़ी सैंटरज़ की वृद्धि। 114 देशों में 41,111 वक़ारे अमल किए गए जिनसे 52 लाख 12 हज़ार डॉलरों की बचत हुई। मर्कज़ी प्रतिनिधियों के दौरे। रकीम प्रैस के अधीन आठ देशों में काम करने वाले छापा ख़ानों का काम। लाखों की संख्या में पुस्तकें, पमफ़्लेटस और लीफ़ लेट्स इत्यादि का प्रकाशन। यस्सरनल क़ुरआन की तरह मन्ज़ूर लिपि से तैयार किए जाने वाले ख़ूबसूरत कुरआन करीम का प्रकाशन। 42 भाषाओं में 407 विभिन्न पुस्तकें, पमफ़्लेटस इत्यादि का 42 लाख 56 हज़ार 659 की संख्या में प्रकाशन। 29 भाषाओं में 94 तालीमी तथा तर्बीयती अख़बारों तथा पत्रिकाओं का सफलता पूर्वक प्रकाशन। 24 भाषाओं में दो लाख के लगभग पुस्तकों को दुनिया के विभिन्न देशों को भिजवाना। विभिन्न देशों में 709 विभिन्न विषयों पर आधारित पुस्तकें, फोल्डरों और पमफ़्लेटस की 63 लाख 87 हज़ार की संख्या में मुफ़्त वितरण। कुरआन करीम का इतालवी भाषा में अनुवाद का पुनः निरीक्षण की पूर्णता। सही बुख़ारी का 11 भागों पर आधारित अनुवाद व्याख्या का प्रकाशन। विभिन्न पुस्तकें हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम का अंग्रेज़ी में अनुवाद। 36 देशों और 8 डैस्कों की तरफ से 33 भाषाओं में 154 पुस्तकें तथा फोल्डरों की तैयारी।

मस्जिदों की स्थापना और तब्लीग़े इस्लाम के कामों के लिए विभिन्न क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले मुख़लसीन की तरफ से निस्वार्थ इख़लास और क़ुर्बानियों का प्रकटन।

सौ साल बाद भी अफ़्रीक़ा के ग़रीब लोग इस रिवायत को क़ायम कर रहे हैं जो आज से लगभग अस्सी नब्बे साल पहले या सौ साल पहले क़ादियान के ग़रीब लोगों ने स्थापित की थी..... यह सच्चाई नहीं तो और क्या है कि अल्लाह तआला ख़ुद ही लोगों के दिलों में तहरीक पैदा करता है कि किस तरह क़ुर्बानियां करनी हैं।

जो चर्च इस इलाक़े में मस्जिद बनाने का विरोध कर रहा था अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इसी चर्च में जमाअत की "मस्जिद मर्यम" बन चुकी है।

हमारे रास्ते में क़ुरआन करीम के प्रकाशन के लिए और पढ़ने के लिए और रखने के लिए जितनी रोकें पाकिस्तान में खड़ी की जा रही हैं अल्लाह तआला उतने ही ज़्यादा बेहतर रास्ते हमारे लिए खोलता चला जा रहा है।

यह वास्तविक तस्वीर दिखा कर जमाअत अहमदिया दुश्मनों को भी इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को मानने वाला कर रही है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम और आदर्श की सही समझ दे रही है। और यह तथा कथित उल्मा जो ख़ुद को इस्लाम के ठेकेदार समझते हैं ये दूसरों को इस्लाम से और क़ुरआन करीम से दूर कर रहे हैं और फिर हमारे ख़िलाफ़ ही बातें करते हैं।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 7 अगस्त 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۔
هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُوْنَ

(अस्सफ़ 9-10)

इन आयतों का अनुवाद है कि वे चाहते हैं कि वे अपने मुँह की फूँकों से अल्लाह के नूर को बुझा दें हालाँकि अल्लाह हर हाल में अपना नूर पूरा करने वाला है चाहे काफ़िर नापसन्द करें। वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म के हर विभाग पर अवश्य ग़ालिब कर दे चाहे मुश्रिक बुरा मनाएं।

आज 7 अगस्त है और यह जमाअत अहमदिया यूके के कैलिंडर के अनुसार जलसा सालाना यूके का पहला दिन है परन्तु इस महामारी के कारण से जो सारी दुनिया में फैली हुई है इस साल जलसा सालाना का ओयजन नहीं हो सका। अल्लाह तआला शीघ्र हालात ठीक करे और इसी तरह समस्त रिवायतों के साथ हम जलसा आयोजित कर सकें जिस तरह हमेशा करते रहे और एक दूसरे को मिलकर प्रेम और भाईचारा को बढ़ाएं और जलसा सालाना के प्रोग्रामों को सुनकर इलमी और आध्यात्मिक हालतों को बेहतर करने के सामान पैदा कर सकें जिस तरह पहले होते थे। बहरहाल इस कमी को एम टी ए ने कुछ हद तक पूरा करने की कोशिश की है। प्रोग्राम बनाया है कि पिछले साल के विभिन्न देशों के जलसा सालाना में मेरी उन तक़रीरों को अब दिखाएंगे जो मैंने की थीं। इसी तरह कुछ लाईव प्रोग्राम भी करेंगे। उम्मीद है कि यह इन्शा अल्लाह तआला जमाअत के लोगों की धर्मी और इलमी प्यास बुझाने के लिए मदद करेंगे। इसलिए घरों में बैठ कर उन तीन दिनों के प्रोग्रामों को खासतौर पर देखें। इसके साथ ही मुझे यह भी ख़्याल आया कि अल्लाह तआला के साल के दौरान जमाअत पर जो फ़ज़्ल होते हैं उस के लिए बजाय यह कि पिछले साल की रिपोर्ट एम टी ए पर पेश की जाए मैं इस साल की ताज़ा

रिपोर्ट पेश करूँ ताकि जमाअत के लोगों के लिए ईमान की वृद्धि का भी कारण हो। इन हालात के बावजूद जो पिछले छ: सात महीने से हैं यद्यपि कुछ काम जो बाहर निकल कर और अधिक बेहतर हो सकते थे वे नहीं हो सके परन्तु फिर भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत की तरक़्क़ी का क़दम आगे ही बढ़ा है और खासतौर पर अधिकतर लोग जो मुझे लिखते हैं कि इस में जो ख़ास तब्दीलियां पैदा हुई हैं वह तर्बीयत और जमाअत के सम्बन्ध में हैं। इस दृष्टि से प्राय ने यही लिखा कि उनमें भी और उनके बच्चों में भी जमाअत से सम्बन्धों में बेहतरी पैदा हुई है। बहरहाल जैसा कि मैंने रिपोर्ट पेश करने के बारे में कहा था कि जलसा के दूसरे दिन जो रिपोर्ट में पेश करता था उसका अक्सर हिस्सा पिछले सालों में भी वक़्त की कमी के कारण से रह जाता था और सम्पूर्ण पेश नहीं हो सकती थी। इस बार क्योंकि कुछ अवसर मिल गया है इसलिए मैंने यह फ़ैसला किया कि ख़ुत्बा जुम्अ: में भी इस रिपोर्ट का कुछ हिस्सा पेश करूँ और फिर कुछ हिस्सा इतवार की शाम को यहां से सीधा हाल में प्रोग्राम करके वहां से पेश किया जाए। यद्यपि कि आज के ख़ुत्बे और परसों शाम हमारा जो ख़िताब का प्रोग्राम है इंशा अल्लाह तआला इस में भी सम्पूर्ण रिपोर्ट तो शायद पेश न हो सके परन्तु कुछ ईमान वर्धक घटनाएं पेश हो जाऐंगी। इंशा अल्लाह तआला।

इस रिपोर्ट के प्रमुख बिन्दु प्रस्तुत करने से पहले मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो उपदेश पेश करूँगा जो इन आयतों का कुछ सीमा तक स्पष्टीकरण करते हैं जो मैंने अभी तिलावत की हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह स्पष्ट और खुला ऐलान भी सामने आ जाता है कि अब इस्लाम की तब्लीग़ के लिए, उसके पुनरुत्थान का यह जो युग है वह आप से ही जुड़ा है और समस्त विरोधों के बावजूद इस्लाम के इस पुनरुत्थान के दौर में आप के इस सिलसिला ने इन्शा अल्लाह तआला फलना है, फूलना है और फैलना है और यह अल्लाह तआला का वादा है। और जो रिपोर्ट और घटनाएं मैं पेश करूँगा वे ख़ुद बोल रही हैं कि आप का दावा केवल दावा ही नहीं बल्कि अल्लाह तआला का समर्थन आप के साथ और आप की जमाअत के साथ हैं और कोई दुनिया की ताक़त नहीं जो इस तरक़्क़ी को रोक सके। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

''लगभग बीस वर्ष का समय गुज़रा है कि मुझको इस कुरआन की आयत का इल्हाम हुआ था। और वह यह है

هُوَ الَّذِیْٓ أَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ

वह ख़ुदा जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह अपने धर्म को समस्त धर्मों पर ग़ालिब करे। और फ़रमाया ''और मुझको इस इलहाम के यह अर्थ समझाए गए थे कि मैं ख़ुदा तआला की तरफ़ से इसलिए भेजा गया हूँ कि ताकि मेरे हाथ से ख़ुदा तआला इस्लाम को समस्त धर्मों पर ग़ालिब करे। और इस जगह याद रहे कि यह क़ुरआन शरीफ़ में एक महान भविष्यवाणी है जिसके बारे में उल्मा मुहक़्क़िक़ीन की सहमति है कि यह मसीह मौऊद के हाथ पर पूरी होगी। अत: जितने औलिया और अब्दाल मुझसे पहले गुज़र गए हैं किसी ने उनमें से अपने आप को इस भविष्य का मिस्दाक़ नहीं ठहराया। और न यह दावा किया कि ऊपर वर्णन की गई इस आयत का मुझ को अपने हक़ में इलहाम हुआ है। परन्तु जब मेरा समय आया तो मुझको यह इलहाम हुआ और मुझको बतलाया गया कि इस आयत का मिस्दाक़ तू है और तेरे ही हाथ से और तेरे ही ज़माना में इस्लाम धर्म को दूसरे धर्मों पर प्रभुत्तव होगा।

(तिर्याक़ुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 231-232 हाशिया सहित)

फिर आप फ़रमाते हैं कि

"यह केवल इस्लाम ही है जो ज़िन्दा मज़हब है। यही है जिसका रबी हमेशा आता है।" अर्थात बहार का मौसम इस में हमेशा आता है ''जबकि उस के दरख़्त हरे होते हैं और मीठे और लज़ीज़ फल देते हैं। इसके सिवा और कोई मज़हब यह गुण नहीं रखता। अगर इस में से यह ख़ूबी निकाल दी जाए तो यह भी मुर्दा हो जाता। परन्तु नहीं वह ज़िन्दा मज़हब है। अल्लाह तआला ने हर ज़माना में इस की ज़िन्दगी का सबूत दिया है। अत: इस ज़माना में भी उसने अपने फ़ज़ल से इस सिल्सिला को इसीलिए स्थापित किया है ताकि वह इस्लाम के ज़िन्दा मज़हब होने पर गवाह हो और ताकि ख़ुदा की मार्फ़त बढ़े और इस पर ऐसा यक़ीन पैदा हो जो गुनाह और गन्दगी को भस्म कर देता है और नेकी और पवित्रता फैलाता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 154-155 प्रकाशन 1984 ई)

इन उद्धरणों के बाद अब मैं कुछ रिपोर्ट के हिस्से पेश करता हूँ।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस साल सारी दुनिया में पाकिस्तान के इलावा जो नई जमाअतें स्थापित हुई हैं उनकी संख्या 288 है और उन नई जमाअतों के इलावा एक हज़ार नए स्थानों पर बल्कि एक हज़ार से अधिक 1040 नए स्थानों पर पहली बार अहमदियत का पौधा लगा है। नए स्थानों पर जमाअत की स्थापना और नई जमाअतों की स्थापना में सेरालियून सब से पहले है जहां 40 नई जमाअतें स्थापित हुई हैं। इसके बाद कांगो कनशासा है यहां 31 जमाअतें स्थापित हुईं। तीसरे नम्बर पर घाना है जहां 23 नई जमाअतें बनी हैं और इसके इलावा बहुत सारे दूसरे देश हैं जहां दस, बारह, आठ, नौ, दो, तीन जमाअतें स्थापित हुई हैं। उनमें गेम्बिया, लाइबेरिया, बेनिन, आवरीकोस्ट, नाईजर, सेनेगाल, गिनी बसाऊ, तनज़ानिया, गिनी कनाकरी, नाईजीरिया, टोगो, साओ तोमे, कैमरोन, तुर्की, कोंगो बराज़ावेल, योगेंडा और इसी तरह और भी बहुत सारे देश हैं।

हमारे कोंगो किंशासा के लोकल मुरब्बी मुअल्लिम हमीद अहमद कहते हैं कि एक गांव है लूबी चअकूओ (LOBI TSHAKU) इसके सुन्नी इमाम उस्मान साहिब ने जब रेडीयो एफ़ ऐम पर हमारा तब्लीग़ी प्रोग्राम सुना तो हमारी मस्जिद पहुंच गए और विभिन्न सवालों की बोछाड़ कर दी। इस पर उनके सवालों के तसल्ली देने वाले जवाब दिए गए। इसी तरह उनको जमाअत का सवाहेली अनुवाद क़ुरआन भी दिया गया और अन्य जमाअत की किताबें भी दी गईं। इन किताबों के अध्ययन के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन्होंने बैअत कर ली और वादा किया कि अपने गांव जाकर जमाअत का पैग़ाम देंगे। अल्लाह के फ़ज़ल से उनकी तब्लीग़ से इस गांव में बीस लोगों पर आधारित एक नई मुख़लिस जमाअत स्थापित हो चुकी है।

फिर गेम्बिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि रमज़ान के महीने में एक क्षेत्र में वहां के मुअल्लिम सिलसिला ने और सदर जमाअत ने एक तब्लीग़ी प्रोग्राम बनाया और इसके लिए जब किसी गांव में गए तो वहां तब्लीग़ी प्रोग्राम के बाद गांव के एक बुज़ुर्ग ने कहा कि मैं आप लोगों के आने से बहुत ख़ुश हूँ क्योंकि यह तब्लीग़ी काम जो आप लोग कर रहे हैं यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार हैं। आप लोग इस सुन्नत पर अमल कर रहे हैं इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी मदीना से हिजरत की थी। अफ़्रीकनों का एक अपना अंदाज़ है। मिसालें पेश करते हैं। वो (मिसाल देते हैं कि मक्का से हिज्रत की और मदीना इसलिए आए कि इस्लाम फैले। इसी तरह आप लोग भी बाहर निकले हैं और हर जगह इस्लाम की तब्लीग़ कर रहे हैं और यही सुन्नत है और यही तरीक़ा है सही इस्लाम की तब्लीग़ का और हम लोग आपको ख़ुश-आमदीद कहते हैं और आप लोगों ने इमाम महदी अलैहिस्सलाम की जो शिक्षाएं पेश की हैं यही वास्तविक इस्लाम है। हम सब ईमान लाते हैं और हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम को वही इमाम महदी मानते हैं जिसकी भविष्य आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी। यहां अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दो फ़ैमिलीज़ के कुल 19 लोगों ने बैअत की और अहमदियत में दाख़िल हुए।

अमीर साहिब लाइबेरिया लिखते हैं कि हमारे मिशनरी ने ख़ुत्बा जुम्अ: में तहरीके जदीद के हवाले से माली क़ुर्बानियों का महत्व वर्णन किया तो वहां कुछ ग़ैर अहमदी मुसलमान भी नमाज़ पढ़ने आते हैं। जब अहमदी अपने नाम लिखवा रहे थे तो एक व्यक्ति आया और उसने पच्चास लाइबेरियन डालर दिए और बग़ैर बताए चुप करके चला गया। जब उसका पता किया गया तो पता लगा कि वह साथ के गांव का आदमी था और जब उसने ख़ुत्बा सुना और क़ुर्बानी की घटनाएं सुनी और महत्व सुना तो प्रभावित हुआ और उसने भी चन्दा दे दिया। जब हमारे मुअल्लिम को, मिशनरी को पता लगा तो वह वहां गए, उनका शुक्रिया अदा किया और मिल रहे थे तो इस दौरान में गांव के दूसरे लोग भी जमा हो गए और जब उन्होंने बातें सुनीं तो बड़े प्रभावित हुए और वहां के जो इमाम थे वह भी बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि आप लोग कुछ दिन बाद दोबारा आएं। मैं दो तीन गांव को इकट्ठा करूँगा आप वहां तब्लीग़ करें। अत: निर्धारित दिन हमारा तब्लीग़ी वफ़द वहां पहुंचा। वहां तीनों गावों के लोग जमा थे और जमाअत के अक़ीदों के बारे में बताया गया। स्थापना का उद्देश्य और इस का विस्तार बताया गया। कहते हैं फिर इसके बाद सवालों का एक लम्बा सिलसिला शुरू हुआ जो सारा दिन जारी रहा। जब हर लिहाज़ से तसल्ली हो गई तो तीनों गांव के इमामों ने अपने समस्त लोगों के समेत अहमदियत में शामिल होने का ऐलान कर दिया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन तीनों गांव में जमाअतें स्थापित हो गईं।

लाइबेरिया से मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि एक गांव कालांगोर (KULANGOR) में जुम्अ: के रोज़ तब्लीग़ के लिए गए। मैं नमाज़ जुमा

से कोई दो घंटे पहले वहां पहुंच गया और आरम्भिक गुफ़्तगु के समय पता चला कि लोग जुम्अ: की नमाज़ अपनी मस्जिद में अदा नहीं करते बल्कि क़रीबी बड़े गांव में जुम्अ: होता है जिसमें दो तीन लोग यहां से भी चले जाते हैं और बाक़ी सारा गांव मुस्लमान होने के बावजूद जुम्अ: की बरकतों से वंचित रहता है। जब कारण पूछा तो गांव वालों ने बताया कि बड़े इमाम ने हमें कहा है कि मस्जिद में जुमा शुरू करने से पहले तीन बकरियां ज़िब्ह करनी ज़रूरी होती हैं और फिर जब बकरियां ज़िब्ह हो जाएं और गोश्त भी इमाम साहिब को पहुंच जाए तो फिर वह किसी को इमाम निर्धारित कर देते हैं जो जुमा पढ़ाएगा। उनको बड़ा क़ायल करने की कोशिश की कि यह ग़लत है। इस्लाम में कोई ऐसी शर्त नहीं है। नमाज़ जुम्अ: की बरकतों के बारे में बताया और उनको कहा कि अच्छा आज हम आपको बग़ैर बकरियां ज़िब्ह किए जुम्अ: पढ़ा देते हैं। क्योंकि गांव के लोग थे वहमी भी होते हैं, रस्मो रिवाज मानने वाले भी होते हैं, इलम भी उनको धर्म का नहीं है उनको बड़ा ख़ौफ़ और ख़तरा पैदा हुआ कि कहीं मौलवी की ना-फ़रमानी न हो जाए और हम गुनाहगार न बन जाएं और इसके नतीजे में हम पर कोई अज़ाब न नाज़िल हो जाए जिस तरह मौलवी डराते हैं परन्तु बहरहाल जब उनको बहुत अधिक ज़ोर दिया गया तो वो मान गए और जुम्अ: पढ़ाया गया। सब लोग इस में शामिल हुए। जुम्अ: के बाद जमाअत का विस्तारपूर्वक परिचय हुआ। सवाल तथा जवाब भी हुए। लोगों के ज़हनों में चूँकि इमाम साहिब की, बड़े इमाम की डांट डपट का भी ख़्याल था इसलिए मुबल्लिग़ ने उनको कहा कि अगर कोई सवाल करे कि ऐसे जुमा क्यों पढ़ा है तो आप लोग सिर्फ उनसे यह पूछें कि बताओ यह कहाँ लिखा है कि जुमा पढ़ने से पहले बकरों का ज़िब्ह करना ज़रूरी है। फिर जब मौलवी को पता चला कि वहां जुम्अ: की नमाज़ हो गई है तो पूछताछ के लिए वहां पहुंच गया और बड़ा नाराज़ हुआ। गांव वालों ने यही सवाल किया कि हमें कब दिखाएंगे कहाँ लिखा हुआ है कि जुम्अ: से पहले बकरे ज़िब्ह करना ज़रूरी है और वह भी तीन बकरे। बाद में हमारे लोकल मिशनरी ने गांव के एक व्यक्ति को जुमा पढ़ने का तरीक़ सिखा दिया। अब नियमित वहां जुमा होता है और लोगों ने भी उस मौलवी को छोड़ दिया है और सबने यही फ़ैसला किया है कि हक़ीक़ी इस्लाम यही है जो जमाअत अहमदिया ने हमें सिखाया है न कि वह जो मौलवी हमें बताते हैं। अल्लाह के फ़ज़ल से उनमें से अधिकतर लोग जमाअत में शामिल हो गए और अल्लाह के फ़ज़ल से यहां नई जमाअत की स्थापना हुई।

अजीब अजीब नई बिदअते हैं जो उन लोगों ने मज़हब के नाम पर शुरू की हुई हैं और इसी तरह यह कम इलम लोगों का, बेचारों का ग़लत मार्गदर्शन करते हैं।

फ़िलपाइन से मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि "सालो पेंग" (Saluping) का क्षेत्र उग्रवादी मुसलमानों के कारण से मशहूर है और तब्लीग़ी जमाअत की सरगर्मीयां भी यहां काफ़ी तेज़ हैं। इस क्षेत्र में हमारे एक मुअल्लिम साहिब के सुसराल के रिश्तेदार भी रहते हैं। मुअल्लिम साहिब ने जब अपने रिश्तेदारों को तब्लीग़ की तो उनकी तरफ़ से सकारात्मक जवाब मिला तो नेशनल स्तर पर यहां तब्लीग़ का प्रोग्राम बनाया गया और तीन मुअल्लेमीन और तीन दाईयान की एक टीम एक सप्ताह के लिए इस क्षेत्र में भेजी गई। लोकल मुसलमानों की तरफ़ से विरोध का सामना हुआ जिस तरह प्राय होता है परन्तु इस विरोध के बावजूद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 23 लोग बैअत करके जमाअत में शामिल हुए।

सेनेगाल के अमीर साहिब लिखते हैं कि एक क्षेत्र है ताँबा कंडा। इस में हमारा तब्लीग़ी वफ़द गया। एक क़स्बा में गया तो वहां जाकर मालूम हुआ कि वहां पहले से ही दो फ़िर्क़ों तेजानिया और मुरीदिया के मध्य बेहस जारी है। वहां के इमाम ने हमारे वफ़द के एक मैंबर को कहा कि उनमें से कोई फ़िर्क़ा हक़ पर नहीं। हम प्रतीक्षा करते हैं। क्योंकि हमने सुना है कि एक सच्चा इमाम आने वाला है हम उस को स्वीकार करेंगे। जब हमारे वफ़द ने तब्लीग़ की और सवाल तथा जवाब किए तो हमारे वफ़द के पास मौलाना नज़ीर मुबश्शिर साहिब की किताब "अलकौलुस्सरीह फ़ी ज़हूरुल महदी वलमसीह" थी और क़ायदा यस्सरनल क़ुरआन भी था। दोनों इस इमाम ने ख़रीद लिए और वफ़द ने तब्लीग़ की और वापस आ गए। दो दिन के बाद इमाम ने फ़ोन करके बुलाया और कहा कि हमें मुंडनगा भाषा का क़ुरआन का अनुवाद भी चाहिए वह भी उन्होंने मंगवाया। जब दूसरी बार हमारा वफ़द वहां गया तो उसने हमारे वफ़द से कहा कि हम जिस सम्प्रदाय के इंतज़ार में थे वह यही अहमदियत है क्योंकि मैंने आपकी किताब और क़ुरआन करीम का अनुवाद अपनी भाषा में पढ़ा है। इस तरह यह सारा गांव अहमदियत में दाख़िल हो गया और नई जमाअत की स्थापना हुई और फिर क़ायदे भी वहां दिए गए, उनको क़ुरआन करीम भी दिए गए ताकि उनको क़ुरआन करीम पढ़ना सिखाया जाए।

गोइटेमाला के अमीर साहिब लिखते हैं कि कोबान शहर में यहां से दस किलो मीटर का एक इलाक़ा है वहां इस वर्ष पहली बार जमाअत का परिचय हुआ। वहां दो बार दौरा करके इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाया गया और उन्हें जलसा सालाना गोइटे माला पर दावत दी गई। उनमें से एक फ़ैमिली के तीन लोग जलसा सालाना गोइटे माला पर आए और बैअत करके जमाअत में शामिल हुए। इस तरह यहां एक नई जमाअत का आरम्भ हुआ है और यह फ़ैमली अपने दूसरे फ़ैमली के लोगों को अहमदियत का पैग़ाम पहुंचा रही है, तब्लीग़ कर रही है।

सेनेगाल के अमीर साहिब लिखते हैं कि वहां दस जगहों पर एक क्षेत्र में लोकल मुअल्लेमीन और मिशनरीज़ के अधीन सप्ताह में एक घंटा रेडियो का प्रोग्राम होता है और एक घंटा मेरा ख़ुत्बा निरन्तर प्रसारित होता है। यह तब्लीग़ का बहुत अहम माध्यम है। इन प्रोग्रामों में लोग फ़ोन करके सवाल तथा जवाब भी करते हैं। इस माध्यम से इस साल बीस गांवों में जमाअत अहमदिया का पौधा लग चुका है। लोग न केवल अहमदियत की तरफ़ माइल हो रहे हैं बल्कि ख़ुद ही फ़ोन करके अपने यहाँ आने की दावत भी देते हैं।

कबाबीर के मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दक्षिण फ़लस्तीन के शहर में कुछ सालों से अहमदी तो रहते हैं परन्तु वहां मुनज़्ज़म जमाअत स्थापित नहीं थी। अल्लाह के फ़ज़ल से इस साल के दौरान यहां नियमित जमाअत की स्थापना हुई है और अलख़लील जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की जगह है और यहां हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सालम और हज़रत याक़ूब और उनकी पवित्र पत्नियों की क़ब्रें भी हैं। यह पुराना तारीख़ी शहर है। इस शहर में और इर्द-गिर्द के गांव में हमारे 27 अहमदी लोग रहते हैं, बाक़ायदा जमाअत स्थापित कर दी गई है और एक अहमदी ने अपने घर का एक हिस्सा बतौर मस्जिद के अलग किया है कि यहां नमाज़ें पढ़ा करें।

नई मस्जिदों की तामीर और जमाअत को प्राप्त होने वाली मस्जिदें।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इनकी सामूहिक संख्या 217 है। जिनमें से 124 नई मस्जिदें बनाई गई हैं और 93 बनी बनाई मिली हैं और इस में यूके और फ्रांस और जर्मनी और हिन्दुस्तान और इंडोनेशिया और घाना और नाइजीरिया और सेरालियून और बेनिन, बुर्कीना फासो, लाइबेरिया, एवरी कोस्ट, गिनी बसाऊ, तन्ज़ानिया, योगंडा, माली, कोंगो किंशासा, केमरोन, सेनेगाल, गिनी कनाकरी, टोगो, चाड, ज़ेमबिया, आस्ट्रेलिया इत्यादि शामिल हैं। दुनिया के बहुत सारे देशों में लगभग तीन महाद्वीपों में बल्कि चार महाद्वीपों में हमें अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मस्जिदों की यह तौफ़ीक़ मिली।

गोएटेमाला में 31साल के समय के बाद दूसरी मस्जिद की तामीर हुई है और पहली मस्जिद जिसका नाम "बैयतुल अव्वल" था वह 1989 ई में , eighty nine में तामीर हुई थी। इस तरह 31 साल के बाद यह दूसरी मस्जिद जिसका नाम मस्जिद नूर है काबोन के क्षेत्र में बनाई गई है। इस क्षेत्र में 2015 ई में अहमदियत का पैग़ाम पहुंचा था। यह क्षेत्र गोइटे माला में हमारे मर्कज़ से 328 किलोमीटर दूर है और 70 किलोमीटर का पहाड़ी रास्ता है और सड़कें भी कच्ची है और छोटी है और बहुत ख़तरनाक है। मस्जिद की बुनियाद दिसम्बर 2019 ई में रखी गई थी। इसके बाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अल्लाह की तक़दीर इस तरह प्रकट हुई कि वहां सड़क की तामीर भी शुरू हुई और अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह सत्तर किलोमीटर का रास्ता भी बहुत बेहतर हो गया है और सड़क को चौड़ा करने का काम भी जारी है। इस मस्जिद में 170 नमाज़ियों की गुंजाइश है। एक मीनार भी तामीर हुआ है जिसकी ऊंचाई साढ़े आठ मीटर है। मस्जिद के साथ दो मंज़िला मिशन हाऊस भी तामीर हुआ है। ग्रांऊड फ़्लोर पर लाइब्रेरी और दफ़्तर है। पहले फ़्लोर पर रिहायशी हिस्सा तामीर किया गया है। जमाअत का किचन बनाया गया है। मर्दों औरतों के अलग अलग वाश रूमज़ इत्यादि जिस तरह हमारी मस्जिद में होता है यह सब कुछ है और यह ऊंची जगह होने की कारण से दूर से नज़र आती है।

नार्वे में जमाअत क्रिस्चन सांड (Kristiansand) में इस साल एक चर्च की इमारत बतौर मस्जिद ख़रीदी गई है और इस शहर में जुलाई 2017 ई में एक इमारत ख़रीदी गई थी जो एक कंपनी का ऑफ़िस था। वहां नमाज़ें पढ़ने और इज्लास करने का आरम्भ कर दिया गया था। इस जगह को मस्जिद बनाने के मन्सूबे का आरम्भ और नक़्शे इत्यादि बनाने का काम जब शुरू किया गया और जब यह हुकूमत के संस्थाओं में पेश किए गए तो इर्द-गिर्द की आबादी ने इस का विरोध किया की और अख़बारों में भी इस विरोध का बहुत अधिक वर्णन आया। लगभग दो

साल यह सिलसिला चलता रहा। विरोध होता रहा। इसके क़रीब ही पड़ोस में एक चर्च भी स्थित है। चर्च के लोगों ने भी मस्जिद बनने का भरपूर विरोध किया परन्तु ख़ुदा तआला की तक़दीर इस तरह ग़ालिब आई कि वही चर्च जो हमारा विरोध कर रहा था उस के प्रबन्धकों से अपना चर्च न सँभाला गया और उन्होंने चर्च बेचने का फ़ैसला किया। कौंसल से कहा कि वह चर्च बेचना चाहते हैं। इस पर कौंसल ने उसे मश्वरा दिया कि वह जमाअत अहमदिया से सम्पर्क कर लें हो सकता है कि वह यह चर्च ख़रीद लें। अत: इस पर उन्होंने हमारे मुबल्लिग़ से सम्पर्क किया। इस पर सारा निरीक्षण लेकर उन्होंने मुझे रिपोर्ट पेश की और मेरी मंज़ूरी से फिर यहां चर्च की इमारत बतौर मस्जिद ख़रीद ली गई और इस साल 25 फरवरी को अल्लाह के फ़ज़ल से चर्च की चाबी मिल गई है। वही चर्च जो इस इलाक़े में मस्जिद बनाने का विरोध कर रहा था अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इसी चर्च में जमाअत की "मस्जिद मर्यम" बन चुकी है और सारे हुकूमती खर्चे शामिल करके जो खर्चे हुए हैं वह लगभग दस मिलियन नारवीजन क्रोनर हैं।

मलावी में पहली मस्जिद की तामीर हुई है। यहां के एक डिस्ट्रिक्ट MangochiकेMwala नामी क्षेत्र में जमाअत की पहली मस्जिद बनाई गई है। अमीर साहिब तन्ज़ानिया लिखते हैं कि मस्जिद और मिशन हाऊस के बनाने से पहले क्षेत्र वालों को भरोसा में लिया गया। वह सब अपने गांव में मस्जिद के बनने से निहायत ख़ुश थे परन्तु कुछ बुरा चाहने वालों ने वहां हमला कर दिया और मकान बनाने का सामान इत्यादि उठा कर ले गए। इस के कारण से पुलिस के आदेश से कुछ दिन काम रोक दिया गया। जब दोबारा तामीर का काम आरम्भ हुआ तो गांव के लोगों को बताया गया कि हालात की संगीनी क्या है और अब मुत्तहिद हो कर उस की सुरक्षा करें। उनको ध्यान दिलाया गया ताकि दोबारा कोई ऐसी कार्रवाई न हो। सबने कहा कि वास्तव में यह मस्जिद हमारे गांव के लिए एक नेअमत से कम नहीं। हम सब मिलकर इस बात को यक़ीनी बनाएंगे कि इस की तामीर हो और कोई अप्रिय घटना न हो। इस तरह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत ने, जमाअत के लोग जो वहां हैं उन्होंने इर्द-गिर्द के लोगों से तब्लीग़ के सम्पर्क भी बढ़ाए और अहमदियत की अमन पसन्द और मुहब्बत वाली शिक्षा जो है जो इस्लाम की वास्तविक शिक्षा है इस से लोगों को परिचित किया। बहरहाल जब वह मस्जिद सम्पूर्ण हुई और इस के उद्घाटनीय आयोजन आयोजित किया गया तो सामूहिक तौर पर यहां लगभग साढ़े चार-सौ के लगभग लोग शामिल हुए जिनमें वहां के विभिन्न ज़ोन से 13 चीफ़ भी आए हुए थे। पुलिस इन्सपैक्टर थे, अन्य मस्जिदों के इमाम भी थे। और इस अवसर पर ग़ैर अज़ जमाअत ने स्पष्ट रूप से इस बात का इज़्हार किया कि हमें अहमदियों के बारे में ग़लत तौर पर बताया गया था कि यह मुसलमान नहीं हैं और उनका इबादत का तरीक़ भी मुसलमानों से विभिन्न है परन्तु यहां आकर हमें विश्वास हो गया है कि आप न सिर्फ मुसलमान हैं बल्कि अन्य मुसलमानों को भी अमन के साथ रहने की नसीहत करते हैं। इस तरह विभिन्न प्रोग्रामों के नतीजे में इस इलाक़े के तीन गांव में एक हज़ार से अधिक लोग बैअत करके जमाअत में शामिल हुए जिनमें अपने अपने ज़ोन के चीफ़स भी शामिल हैं।

मस्जिद बैयतुल आफ़ियत मैक्सीको (Mexico) मैक्सीको की राजधानी मैक्सिको सिटी में कुछ साल पहले एक इमारत बतौर सैंटर ख़रीदी गई थी। यह मैक्सिको में जमाअत की पहली ख़रीदी हुई प्रॉपर्टी है। यह इमारत तीन मंज़िला है। इस इमारत के ग्रांऊड फ़्लोर को बतौर मस्जिद तैयार किया गया है। इस फ़्लोर पर मर्दों और औरतों के लिए नमाज़ का हाल है, लाइब्रेरी है और जमाअत के दफ़्तर है और कुछ कमरे हैं जो विभिन्न क्लासों के लिए इस्तिमाल में लाए जाते हैं। दूसरी मंज़िल पर मुरब्बी सिलसिला की रिहायश है और तीसरी मंज़िल ज़रूरत के अनुसार बाद में प्रयोग में लाई जाएगी।

बेलीज़ (Belize)और कुछ और स्थानों पर भी मस्जिदें बन रही हैं इन्शा अल्लाह तआला वे भी शीघ्र सम्पूर्ण हो जाएँगी। जो अभी बन रही हैं और लगभग सम्पूर्ण होने वाली हैं उनका मैं वर्णन नहीं कर रहा।

अमीर साहिब माली लिखते हैं कि माली की एक जमाअत डेमा (Diema) हमारे मर्कज़ बामाको से तीन किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। यहां चार साल पहले मस्जिद की तामीर का काम शुरू हुआ और जब यह काम आख़िरी चरण में था। मीनार और फिनिशिंग (finishing) इत्यादि का काम रहता था तो गांव के चीफ़ की तरफ़ से कहा गया कि मस्जिद का काम रोक दिया जाए और विरोध के कारण से लोगों ने अहमदियत के बारे में ग़लत बातें गांव के चीफ़ और मेयर इत्यादि से कीं। बहरहाल काम रोक दिया गया और तीन साल तक कोशिश होती रही। आख़िर तीन साल के बाद चीफ़ से सम्पर्कों और विभिन्न माध्यमों से उनको क़ाइल करने से वहां मस्जिद की इजाज़त मिल गई और चीफ़ ने इस बात की बड़ी प्रशंसा की कि आप लोगों ने तीन साल बड़े सब्र से काम लिया है और जबकि आप लोग अपने ऊपर के सम्बन्धों को प्रयोग करके यहां मस्जिद बना सकते थे और वहाबियों की उसने मिसाल दी कि उनको भी यहां रोका गया था परन्तु उन्होंने अपने कुछ सम्पर्क इस्तिमाल करके मस्जिद बना ली थी और आप भी कर सकते थे परन्तु जिस तरह आप लोगों ने सब्र से काम लिया है उस पर हमें आपकी बड़ी क़दर है और गांव के चीफ़ और उनके नायबीन ने बार-बार जमाअत से माफ़ी मांगी कि हम इतनी लेट आपको इजाज़त दे रहे हैं और उन्होंने कहा कि अब हम सब ने फ़ैसला किया है कि आप लोग मस्जिद का काम सम्पूर्ण करवाएं और नमाज़ें शुरू कर लें और अब अल्लाह के फ़ज़ल से बाक़ायदा इस मस्जिद में नमाज़ें शुरू कर दी गई हैं।

अमीर साहिब तन्ज़ानिया लिखते हैं कि उनका एक क्षेत्र है जिसमें इस साल दो जमाअतों में अल्लाह के फ़ज़ल से मस्जिदें बनाने की तौफ़ीक़ मिली। इन मस्जिदों की तामीर से पहले क़रीबी गांव से सुन्नी उल्मा यहां आकर लोगों को गुमराह करते थे कि जमाअत अहमदिया एक छोटी सी जमाअत है। इसके पास मस्जिद बनाने की ताक़त नहीं है। उन्होंने इस से पहले भी क़रीबी गांव में दो मस्जिदें बनाई हैं बस वही काफ़ी हैं। उनसे और मस्जिद कोई नहीं बननी। परन्तु कुछ ही समय बाद जब इस गांव में भी मस्जिद की तामीर का कार्य आरम्भ हुआ तो हैरान रह गए और लोगों को कहने लगे लगता है उन लोगों के पास कोई ख़ास ताक़त है जो इतने कम समय में बड़ी ख़ूबसूरत मस्जिदें बना लेते हैं। हमसे तो यहां एक टेंट भी नहीं लगाया गया जहां हम नमाज़ अदा कर सकें। फिर उन्होंने दूसरे तरीक़े इस्तिमाल करने शुरू कर दिए और लोगों में ख़ौफ़ फैलाना शुरू कर दिया कि अहमदियों से बच कर रहो। उनके इरादे यह हैं कि यह सारे इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लेंगे और ये कर देंगे और वह कर देंगे और मस्जिदें बनाएंगे। परन्तु बहरहाल लोगों ने उनकी कोई परवाह नहीं की।

मुबल्लिग़ बुर्कीना फासो लिखते हैं कि कारी जमाअत में जहां मस्जिद की तामीर का काम हो रहा था वहां हर आदमी ही मस्जिद की तामीर में एक अलग भावना से हिस्सा ले रहा था और लोगों को चंदा की तहरीक भी की जा रही थी। हर कोई अपने अपने रंग में इस नेकी में शामिल हो रहा था। एक दिन दो बड़ी उम्र के अहमदी आए। उनके हाथ में दो मुर्ग़ थे और कुछ अंडे लिए हुए थे। और उन्होंने कहा कि हमारे पास सिर्फ यही है। दो मुर्गे हैं और ये अंडे हैं। इसको ही हमारी तरफ़ से मस्जिद के लिए बतौर चंदा समझ लें ताकि हम भी इस नेक काम में शामिल हो जाएं। अत: मुअल्लिम साहिब ने उनको उस की रसीद दी।

सौ साल बाद भी अफ़्रीक़ा के ग़रीब लोग इस रिवायत को स्थापित कर रहे हैं जो आज से लगभग अस्सी नब्बे साल पहले या सौ साल पहले कादियान के ग़रीब लोगों ने स्थापित की थी और अगर कोई देखे, अक़ल की आँख से देखे और नेकी उस में हो तो ख़ुद ही उस को पता लग जाएगा कि यह सच्चाई नहीं तो और क्या है कि अल्लाह तआला ख़ुद ही लोगों के दिलों में तहरीक पैदा करता है कि किस तरह क़ुर्बानियां करनी हैं।

तनज़ानिया के इरंगा (Iringa) क्षेत्र के मुअल्लिम अहमद साहिब लिखते हैं कि अप्रैल 2020 ई में कुछ ख़ुद्दाम के साथ एक क़रीबी गांव में गया और लोकल गर्वनमैंट से इजाज़त लेकर पब्लिक स्थान पर दोपहर एक बजे से शाम छ: बजे तक तब्लीग़ी लैक्चर का आयोजन किया। लैक्चर के बाद शामिल लोगों के सवालों के उत्तर दिए गए। इस प्रोग्राम के आख़िर में एक 72 वर्षीय औरत हलीमा साहिबा अपने हाथ में एक फाईल लिए हुए आईं और कहा कि मैं मुसलमान हूँ और लंबे समय से यहां पर रहती हूँ। मैं ने कभी किसी को इस्लाम की तब्लीग़ के लिए यहां आते नहीं देखा और अपने हाथ में पकड़ी हुई फाईल मुअल्लिम को देते हुए कहा कि यह मेरा रिहायशी प्लाट है। इसके काग़ज़ात हैं। यह उस की रजिस्ट्रेशन इत्यादि है। जब आपकी जमाअत यहां तैयार हो जाए और आप मस्जिद तामीर करना चाहें तो मेरा प्लाट हाज़िर है। यह मिल्कियत मैं आपको देती हूँ। अत: अब वहां जमाअत के लोगों के वक़ारे अमल से मस्जिद की तामीर शुरू हो गई है। उन्होंने ईंटें इत्यादि बना ली हैं और जो काम कर रहे हैं उनमें इस बूढ़ी औरत के बेटे भी शामिल हैं। इस तरह ख़ुदा तआला नेक फ़ित्रत लोगों के दिल में डालता है जो मददगार बन के आते हैं।

बुर्कीना फासो की एक जमाअत है कारी। वहां की एक औरत ज़ैनब साहिबा हैं वह कहती हैं कि मैं बी ए की परीक्षा पास करने के बाद दो साल तक नर्स बनने के लिए टैस्ट देती रही परन्तु कामयाब न हो सकी। मैंने और मेरे पति ने एक प्राईवेट

नर्सिंग स्कूल में दाख़िला के लिए पैसे जमा करने शुरू कर दिए और इस दौरान टैस्ट भी देती रही परन्तु उम्मीद न थी कि दाख़िला होगा। इसी दौरान कारी की मस्जिद के लिए चंदे की तहरीक की गई तो हमने जो रक़म शिक्षा के लिए जमा की थी वह चंदे में अदा कर दी और दाख़िला का इरादा कुछ देर के लिए छोड़ दिया। कहती हैं अभी इस बात को दो सप्ताह भी नहीं हुए थे कि मुझे हैल्थ डिपार्टमैंट की तरफ़ से फ़ोन आया कि आपकी डाइरेक्ट स्लेक्शन हो गई है। आपकी शिक्षा के समस्त खर्चे गर्वनमेंट ख़ुद अदा करेगी। इस तरह अल्लाह तआला लोगों के ईमान में वृद्धि के भी सामान पैदा फ़रमाता है।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस साल 97 मिशन हाऊसज़ का भी इज़ाफ़ा हुआ और मिशन हाऊसज़ में या तब्लीग़ी सैंटर में पहला नम्बर घाना का है। फिर इंडोनेशिया है। फिर भारत है। फिर सैरालियून है। फिर कोंगो किंशासा, कोंगो बराज़ा वेल, बुर्कीना फासो, एवरी कोस्ट, माली। इसके इलावा बहुत सारे दूसरे देश आस्ट्रेलिया, बंग्ला देश, बेलीज़, कैनेडा, गेम्बया, गोइटे माला, गिनी बसाऊ, मेसीडोनिया, मलावी, नार्वे, साओ तोमे, टोंगा, तुर्की हैं, यहां भी एक-एक मिशन हाऊस की वृद्धि हुई है।

तंज़ानिया के सिमेवओ (Simiyu)क्षेत्र से मुअल्लिम लिखते हैं कि पिछले साल स्थापित होने वाली जमाअत में इस साल मस्जिद और मिशन हाऊस की तामीर हुई। इस दौरान ईसाइयों के एक पादरी ने पूछा कि यह घर किस लिए बनाया जा रहा है? उन्हें बताया गया कि जमाअत के मुअल्लिम के रहने के लिए है इस पर उन्होंने हैरत का इज़हार किया कि इस गांव में ईसाइयों के छ: चर्च हैं और अक्सर फ़िरक़े लंबे समय से इस गांव में आबाद हैं उनमें से किसी एक को भी यह तौफ़ीक़ नहीं हुई कि अपने पादरी के रहने का घर बना सकें। अवश्य आप लोग अपने मज़हबी रहनुमाओं का इज़्ज़त और सम्मान करते हैं और अपने माटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" पर पूरा अमल करते हैं और यह उदाहरण दूसरों को भी अपनाना चाहिए।

जमाअत अहमदिया का एक विशेष निशान वक़ारे अमल है। इस साल अफ़्रीक़ा के विभिन्न देशों में जो मस्जिदें और मिशन हाऊसज़ बनाए गए और दूसरे काम किए गए इस में 148 देशों से प्राप्त होने वाली रिपोर्ट के अनुसार 114 देशों में कुल 41,111 वक़ार अमल किए गए जिनके द्वारा 52 लाख 13 हज़ार युवाईस डॉलरज़ की बचत हुई है। अफ़्रीक़ा में जो मस्जिद बनती है अब अगर उस के खर्चों को देखें तो इसका अर्थ है लगभग वक़ारे अमल की रक़म से जो बचत हुई है इस से दस अन्य मस्जिदें बनाने की अल्लाह तआला ने जमाअत को तौफ़ीक़ दे दी। इस तरह अल्लाह तआला हमारे पैसे में भी बरकत डालता है।

मर्कज़ी नुमाइंदगान के दौरे हुए और दुनिया के बेशुमार देशों में दौरे हुए जहां मर्कज़ी प्रतिनिधि गए। उनका विस्तार लम्बा है छोड़ देता हूँ। अल्लाह के फ़ज़ल से उन दौरों के वहां सकारात्मक प्रभाव हुआ।

रकीम प्रैस के द्वारा भी अफ़्रीक़ा में काम हो रहा है जहां रकीम प्रैस यूके के अधीन बहुत सारे प्रैस चल रहे हैं और इस साल फ़ारनहम का जो हमारा रकीम प्रैस है केवल इस में जो किताबें छपी हैं वे तीन लाख साठ हज़ार दो सौ चालीस हैं। इसके इलावा रिसाला "मुवाज़ना मज़ाहिब", अन्नुसरत', वक़्फ़ नौ के रिसाले "मर्यम" तथा "इस्माईल"। इस के इलावा पमफ़्लेटस, लीफ़ लेट्स, जमाअते दफ़्तरों की स्टेशनरी इत्यादि के काम भी यहां प्रैस से हो रहे हैं।

यस्सरनल क़ुरआन की लिपि जो मन्ज़ूर लिपि है इस की तरह क़ुरआन करीम का प्रकाशन भी इस साल हुआ है। छ: सात साल से यह काम हो रहा था। कादियान की जमाअत के सपुर्द किया गया था ताकि हमारी अपनी एक लिपि हो जो "ख़त मन्ज़ूर" के अनुसार हो और नज़ारत इशाअत कादियान ने इस पर बड़ा काम किया है। अल्हम्दुलिल्लाह कि इस ख़त के साथ बड़ा ख़ूबसूरत और दिल को लुभाने वाला क़ुरआन करीम छप गया है। रंगीन बॉर्डर हैं। जिल्द बहुत ख़ूबसूरत है और जिस संख्या में यहां आया है, अभी यूके में है और बड़ी जल्दी बिक रहा है। उम्मीद है जल्द ही हमें दूसरा ऐडीशन भी प्रकाशित करना पड़ेगा। और देखने में बड़ा सुन्दर है। इस की जिल्द भी और अंदर लिखाई और काग़ज़ इत्यादि भी और खासतौर पर बाइंडिंग उस की बहुत अच्छी है। और जैसा कि मैंने कहा कि इस क़ुरआन करीम का फाऊंट जो यस्सरनल क़ुरआन के फाऊंट पर ढाला गया है इस का नाम "ख़त मन्ज़ूर" रखा गया है और यह जमाअत अहमदिया की विशेष लिपि है जो बाक़ी जगहों पर नहीं है। और पढ़ने में भी बड़ा आसान है। जैसा कि मैंने कहा कि जमाअत भारत कादियान की नज़ारत इशाअत ने इस पर बड़ी मेहनत का काम किया है इसी तरह यहां रकीम प्रैस की मदद के लिए तुर्की के अहमदी दोस्त महमत (Mehmet) साहिब हैं उन्होंने भी छपवाने में बड़ी मदद की है। आइन्दा इन्शा अल्लाह अनुवाद के साथ छपने वाले क़ुरआन करीम भी इसी फाऊंट में छपेंगे। इसी लिपि के साथ और हज़रत मौलवी शेर अली साहिब का अनुवाद इसी "ख़त मन्ज़ूर" के साथ तैयार हो रहा है। इन्शा-अल्लाह तआला शीघ्र प्रकाशन के लिए दे दिया जाएगा। इसी तरह हज़रत मीर इसहाक़ साहिब के शाब्दिक अनुवाद के लिए भी इसी लिपि को प्रयोग किया जाना है इस की भी तैयारी हो रही है। हमारे रास्ते में क़ुरआन करीम के प्रकाशन के लिए और पढ़ने के लिए और रखने के लिए जितनी रोकें पाकिस्तान में खड़ी की जा रही हैं अल्लाह तआला उतने ही अधिक बेहतर रास्ते हमारे लिए खोलता चला जा रहा है।

इस समय रकीम प्रैस इंग्लिस्तान की निगरानी में अफ़्रीक़ा के आठ देशों घाना, नाइजीरिया, तन्ज़ानिया, सेरालियून, एवरीकोस्ट, गेम्बिया, बुर्कीना फासो और बेनिन में प्रैस काम कर रहे हैं और मशीनरी भी उनको उपलब्ध की गई है और उनकी किताबें जो उन्होंने यहां प्रकाशित की हैं उनकी संख्या छ: लाख बारह हज़ार से ऊपर है। इसके अतिरिक्त पत्रिकाऐं, अख़बार, तब्लीग़ी लिट्रेचर, लीफ़ लेट्स इत्यादि अलग हैं जिनकी संख्या 96 लाख 85 हज़ार है। इस दौरान गेम्बिया में प्राइवेट कामों के अतिरिक्त सेहत विभाग गेम्बिया के लिए भी बड़ी संख्या में covid से आगाही के लिए कुछ एहतियाती सावधानियों पर अपारित पमफ़्लेटस पोस्टर इत्यादि छापने के लिए गवर्नमेन्ट ने दिए क्योंकि बाक़ी प्रैस बंद थे इसलिए हुकूमत ने हमारे से सम्पर्क करके कहा कि छाप दें तो उनकी मदद की गई।

वकालत इशाअत (प्रकाशन का जो काम है 93 देशों से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार 407 विभिन्न किताबें, पमफ़्लेटस और फोल्डर्ज़ इत्यादि 42 भाषाओं में 42 लाख 56 हज़ार 659 की संख्या में प्रकाशित हुए और उनमें विभिन्न देश हैं। इस की लंबी सूचि है।

विभिन्न देशों में स्थानीय रूप से जमाअत की पत्रिकाओं का प्रकाशन

इस समय सारी दुनिया में 94 तालीमी तर्बीयती और मालूमाती निबन्धों पर आधारित अख़बार तथा पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं और 29 भाषाओं में अख़बार तथा पत्रिकाएं प्रकाशित हो रहे हैं।

रिपोर्ट वकालत इशाअत

वकालत इशाअत की तरसील का एक अलग विभाग है यहां से चौबीस भाषाओं में 1 लाख 90 हज़ार से अधिक संख्या में किताबें दुनिया के विभिन्न देशों को भिजवाई गईं। इसके इलावा विभिन्न देशों में 709 विभिन्न विषयों पर आधारित किताबें फोल्डरज़ और पमफ़्लेटस 63 लाख 87 हज़ार की संख्या में मुफ़्त वितरित किए गए और उनके द्वारा सारी दुनिया में लाखों लोगों तक पैग़ाम पहुंचा।

वकालत तसनीफ़ यूके

इस साल क़ुरआन करीम के Italian अनुवाद पर निरीक्षण का काम सम्पूर्ण हो गया है। इस की फाईल भी प्रकाशन के लिए भिजवाई जा चुकी है और इस साल सही बुख़ारी के अनुवाद तथा व्याख्या की ग्यारह जिल्दें यूके से अनुवाद करवाई गई हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रचना "एजाज़ अहमदी" का अंग्रेज़ी अनुवाद इस साल प्रकाशित किया गया है। 'इत्मामुल हुज्जा और "जंग मुक़द्दस" के अंग्रेज़ी अनुवाद पर कार्रवाई मुकम्मल हो चुकी है। इन्शा अल्लाह शीघ्र ये किताबें भी प्रकाशन के लिए भिजवा दी जाएँगी। रुहानी ख़ज़ाइन की जिल्द 10 के इलावा अन्य बाईस जिल्दों को इंग्लिस्तान से प्रकाशित किया जा रहा है और यह दसवीं जिल्द भी इन्शा-अल्लाह तआला शुरू हो जाएगी तो उम्मीद है तेईस की तेईस जिल्दें शीघ्र आ जाऐंगी 19 ई और 20 ई के दौरान 36 देशों और आठ डैस्कों की तरफ से प्राप्त हुई रिपोर्ट के अनुसार 33 भाषाओं में 154 किताबें, फोल्डरज़ तैयार किए गए जिनमें अंग्रेज़ी, स्पेनिश, लेटवेन्, लू गंडा, फ़ारसी, जर्मन, बर्मीज़, फ्रैंच, हाओसा, अरबी, सवाहेली, इंडोनेशियन, उर्दू, चाइनीज़, बरोंडी, मंडीक़ा, मेसीडोनियन, टोंगा, पुर्तगेज़ी, इब्रानी, डच, करोशीन, फूला, बेम्बा, लोज़ी, अल्बानियन, रशियन, बंग्ला, यूरोबा, वूल्फ, नया नज्जा, थाई, नारवीजन इत्यादि शामिल हैं।

यूक्रेन से एक दोस्त अग्रव मेत्रोक साहिब जो पिछले साल जलसा पर आए थे। जब शामिल हुए थे तो अहमदी नहीं थे परन्तु जब जलसा पर आए तो विश्वव्यापी बैअत में शामिल हो कर बैअत कर ली। बहुत अच्छे समीक्षक हैं, समीक्षा करने वाले हैं, तुलनात्मक धर्म के माहिर हैं। जब यहां आए तो मेरे से उनकी मुलाक़ात भी हुई थी और उनको मैंने कहा था कि "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" का अध्ययन करें। आप पढ़े लिखे आदमी हैं और फिर अपनी समीक्षा करें। अत: यह कहते हैं

कि वापस आकर मैं ने किताब का अध्ययन शुरू किया तो एक ही बार में सारी किताब मुकम्मल कर ली। कहते हैं किताब का अध्ययन करने के बाद मुझे इल्म हुआ कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम सिर्फ एक धार्मिक लीडर ही नहीं थे बल्कि तुलनात्मक धर्म के एक बहुत बड़े अन्वेषक भी थे। कहते हैं मैंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत सारी किताबों के बारे में अपनी राय लिखी है परन्तु मैंने कभी यह महसूस नहीं किया कि इन किताबों से कोई नई चीज़ पाई है परन्तु "इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी" के अध्ययन से मेरे ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई है। इस किताब पर यह समीक्षा केवल अक़्ल के तराज़ू पर नहीं बल्कि अपने दिल और रूह के आईने से गुज़ार कर लिख रहा हूँ।

फिर कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम का सुधार और उम्मते मुस्लिमा के सुधार की लिए विशेष ज़ोर दिया है। इस में कोई शक नहीं कि किसी भी मज़हब का नवीनीकरण एक बहुत महत्व वाली बात है। इस हवाले से अगर हम मध्य युग की तरफ़ नज़र डालें तो हमें मालूम होगा कि यूरोप में सुधार का का युग शुरू होने से पहले ईसाइयत में ईमान और यक़ीन की बहुत बड़ी कमी पैदा हो चुका थी और जब तक मसीह मौऊद मबऊस नहीं हुए इस्लाम की भी अवस्था ऐसी ही थी।

कहते हैं मुझे खासतौर पर वह हिस्सा अधिक पसन्द आया जहां स्वाभाविक अवस्थाओं और अख़लाक़ का अभिप्राय समझाया गया है। हमारे लिए बहुत ज़रूरी है कि हम अपने जन्म के वास्तविक उद्देश्य और ख़ुदा तआला के पैदा करने के महत्व को समझें और इस का सम्मान करें। इसी तरह अपने आचरण और इसकी बुनियाद को भी समझने की कोशिश करें। हम अक्सर भूल जाते हैं कि मौजूदा ज़माने में वे माध्यम जो इन्सान को सच्चाई के रास्ते से दूर ले जाते हैं बहुत अधिक हो गए हैं इसलिए बहुत ज़रूरी है कि हम अल्लाह तआला की सृष्टि की क़दर करें।

फिर कहते हैं कि इस पुस्तक का अध्ययन करते हुए मुझे आपके वे शब्द याद आ गए जो आख़िरी ख़िताब में कहे थे। मैंने कहा था इस में कि इस्लामी दुनिया में स्थापित इस्लाम के बारे में ग़लत धारणाओं के सुधार किया और फिर अपनी जमाअत का भी सुधार किया। तो मेरा हवाला देकर यह कहते हैं कि उन्होंने इस्लामी दुनिया में स्थापित इस्लाम के बारे में ग़लत धारणाओं का सुधार किया और फिर जमाअत के सुधार की तरफ़ ध्यान दिलाया थी और वे शब्द मेरे ज़ेहन में आ रहे हैं। कहते हैं जब हम में से हर एक अपने घर वालों अपने माहौल और अपने देश का सुधार करेगा तो इसके परिणाम में वह इस योग्य हो सकेगा कि दुनिया की ईमानी हालत का सुधार कर सके।

फिर कहते हैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी ने "स्वाभाविक अवस्थाओं और 'आचरण की यह व्याख्या वर्णन करके तुलनात्मक धर्म में ज्ञान का एक नया अध्याय खोला है और मेरे नज़दीक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले यह परिभाषा प्रयोग की हैं और उनको बहुत ही उच्च और पवित्र तरीक़ा पर समझाया है।

फिर कहते हैं तुलनात्मक धर्म विज्ञान के माहिर और फ़लासफ़ी जानने वाला होने के कारण मुझे इस किताब के अध्ययन से बहुत आन्नद प्राप्त हुआ है। इसलिए मेरा मश्वरा है कि जमाअत अहमदिया इस किताब को बहुत बड़ी संख्या में प्रकाशित करे और विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद भी करे ताकि लोग इस किताब के अध्ययन से अधिक से अधिक धर्म, ईमान और हक़ीक़ी सच्चाई के बारे में जान सकें।

नेपाल में एक प्रोफ़ैसर साहिब थे उनको जब मेरे विभिन्न लैक्चरज़ जो World Crisis and The Pathway to Peace में इकट्ठे किए गए हैं वह उनको तोहफ़ा दी गई तो कहते हैं कि यह किताब इस वक़्त के हालात के लिहाज़ से बहुत उच्च है। इस किताब के कई पैराग्राफ़ और स्तरों पर उन्होंने निशान लगाए हुए थे। कहने लगे कि मैं इन उद्धरणों को हाई लाईट करना चाहता था क्योंकि इन बातों को दुनिया में बढ़ावा देने की बहुत ज़रूरत है और सारी दुनिया के लिए कई सुनहरे नियम इस में बताए गए हैं। महोदय ने कहा कि यह किताब बहुत अच्छी लगी है और मैं अपने दोस्तों को भी यह किताब अध्ययन के लिए दूँगा।

फिर नेपाल के एक और प्रोफ़ैसर डाक्टर गोविंदा(Dr. Govinda) हैं वह भी समीक्षा करते हैं कि मैंने इस किताब का अध्ययन किया है और आज जबकि सारी दुनिया में मीडिया के कारण से मुसलमानों को ग़लत रंग से पेश किया जाता है ऐसे में एक मुस्लिम लीडर का सारी दुनिया में शान्ति की स्थापना के लिए कोशिश करना ग़ैर मुस्लिमों के लिए बहुत हैरान करने वाला है। और फिर कहते हैं कि दुनिया में मुसलमानों के 73 सम्प्रदाय हैं और इस्राईल के साथ उनकी धार्मिक और राजनीतिक दुश्मनी भी है। इन हालात में एक मुस्लिम नेता की तरफ से विश्व शान्ति की स्थापना के लिए वहां के प्रधानमन्त्री को चिट्ठी लिखना बहुत ही हिम्मत की बात है। और इसी तरह जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा ने ईरान के प्रधानमन्त्री को भी उनके हवाले से चिट्ठी लिखी है जिससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। फिर यह कहते हैं कि 'विश्व संकट और शान्ति का मार्ग" पुस्तक का अध्ययन करने से ग़ैर-मुस्लिमों को इस्लाम के अमन के पैग़ाम को जानने और समझने में बहुत मदद मिलेगी। जमाअत अहमदिया दूसरे मुसलमान फ़िर्क़ों की तुलना में अमन के हवाले से दुनिया में अपनी बात पेश करती है और जमाअत अहमदिया के कथन के अनुसार क़ुरआन मजीद की शिक्षाओं पर अनुकरण करने से ही दुनिया में अमन स्थापित हो सकता है और अवश्य इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता।

फिर एक दोस्त नेपाल में एक बुक स्टॉल पर आए। यह किताब देख के इस सम्बन्ध में कहने लगे कि इस किताब में यह जो सवाल उठाया गया है कि इस्लाम जंग की आज्ञा क्यों और कब देता है? कहने लगे कि यह बहुत प्रमुख सवाल है जिसका मैं बड़े अर्से से जवाब ढूंढ रहा था और आज मुझे जवाब मिला है।

फिर झारखंड इंडिया में एक बुक फेयर पर एक साहिब आए। इस्लाम के बारे में बड़े द्वेषपूर्ण दृष्टिकोण रखते थे। आते ही इस्लाम और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती पर विभिन्न किस्म के आरोप शुरू कर दिए। उन्होंने सब इस्लाम विरोधी किताबें पढ़ी हुई थीं जिसके कारण से एतराज़ कर रहे थे। जब उनको इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बताई गई तो वह बहुत प्रभावित हुए और कहने लगे कि आज तक मुझे सही इस्लाम के बारे में ज्ञान ही नहीं था। अब मैं आपके लिट्रेचर का अध्ययन करूँगा। अत: महोदय को किताबें दी गईं और खासतौर पर यह 'विश्व संकट और शान्ति का मार्ग" वाली किताब। अत: यह दोस्त अगले दिन आए और कहा कि मैंने यह किताब Path way to Peace का कुछ हिस्सा पढ़ा है और बहुत अच्छी लगी है और इस से मेरे ज़हन में मौजूद काफ़ी एतराज़ दूर हो गए हैं। अब महोदय स्थायी सम्पर्क में हैं।

इसी तरह मुबल्लिग़ सिलसिला करीबाती (Kiribati) लिखते हैं कि यहां के लोगों में यह बात समझी जाती थी कि हर मुसलमान दूसरों को क़तल करने के लिए तैयार होता है परन्तु अब कई लोगों को पता है कि यह बात ग़लत है। यहां तक कि प्रधानमन्त्री से जब यह मुतालिबा किया गया और आरोप लगाया गया कि मुस्लमानों को देश के अंदर क्यों आने दिया है? इन लोगों को फ़ौरी तौर पर निकाल देना चाहिए। इस पर प्रधानमन्त्री ने कहा कि मैंने क़ुरआन करीम पढ़ा है और इस्लाम एक अमन वाला धर्म है और मैं उनको कभी यहां से नहीं निकालूँगा। अल्हम्दुलिल्लाह। प्रधानमन्त्री के साथ कुछ मुलाक़ातों में उनको इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं से आगाह किया गया था। इस वक़्त सिर्फ़ जमाअत अहमदिया ही है जो इस देश में इस्लाम की शिक्षाओं को फैला रही है।

फिर श्यानगा क्षेत्र (तनज़ानिया) के दौरे के दौरान क्षेत्रीय मुबल्लिग़ कहते हैं वहां के चेयरमैन से मुलाक़ात हुई। वह समझदार और अक्ल वाला आदमी नज़र आया परन्तु नास्तिक था। कहते हैं मैंने उनको ख़ुदा को मानने और मज़हब की ज़रूरत के बारे में बताया। गुफ़्तगु के दौरान उसने कहा कि मैं समाज में इज़्ज़त वाले पद पर हूँ। घर में मेरी दो बीवियां भी हैं। औलाद भी है। मेरी ज़िन्दगी ख़ुदा को स्वीकार किए बिना अच्छी गुज़र रही है। मुझे ख़ुदा को या किसी मज़हब को मानने की ज़रूरत ही किया है। इस पर मुबल्लिग़ सिलसिला ने उनको हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के हस्ती बारी तआला के बारे में जो तर्क थे उस के उदाहरण पेश किए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की ये दो किताबें बड़ी अच्छी हैं। हर अहमदी को भी पढ़नी चाहिऐं। उनको सुनने के बाद वह कहने लगे कि मैं इस्लाम अहमदियत स्वीकार करना चाहता हूँ। इस पर मुबल्लिग़ ने कहा कि अभी तो आप मज़हब की ज़रूरत ही से इन्कार कर रहे थे और इस्लाम अहमदियत स्वीकार करने के लिए तैयार हो गए हैं। इस पर कहने लगा कि आपकी बातों से मेरा दिल सन्तुष्ट हो गया है। अगर मज़हब वास्तव में इसी तरह ख़ुदा की धारणा पेश करता है तो अवश्य हमें उसे मानना चाहिए। उन्हें बैअत की शर्तें पढ़ कर सुनाई गईं और वह अपने आठ बच्चों समेत अहमदियत में दाख़िल हो गए। अलहमदो लिल्लाह बाक़ायदगी से जुम्अ: की नमाज़ पढ़ने आते हैं ओर निज़ाम से मुकम्मल सम्पर्क रखे हुए हैं।

लीफ़ लेट्स के बांटने का मन्सूबा था। इस साल 111 देशों में सामूहिक रूप से 93 लाख 57 हज़ार से अधिक लीफ़ लेट्स बांटे गए जिसके द्वारा 2 करोड़ 27 लाख

लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। इस में जर्मनी ने सबसे अधिक 25 लाख बांटे हैं फिर यूके के 13 लाख हैं। फिर आस्ट्रेलिया 8 लाख है। फिर हॉलैंड 4 लाख। फ्रांस 3 लाख। कैनेडा 3 लाख और इस तरह कई बाक़ी देश लाखों में हैं।

अफ्रीक़ा में जो बांटे गए उनमें तंज़ानिया सब से पहले है लगभग 2 लाख। फिर बेनिन है। उनका भी लगभग इस के बराबर ही है। फिर बुर्कीना, नाईजर, नाईजीरिया, कोंगो किंशासा इत्यादि हैं। इसके इलावा इंडिया में 4 लाख 46 हज़ार से अधिक फ्लावर बांटे गए हैं।

तंज़ानिया के मारा (Mara) क्षेत्र के मुअल्लिम लिखते हैं कि एक गांव के तीन नौजवानों ने जमाअत के पमफ़्लेटस पढ़ कर फ़ोन के द्वारा सम्पर्क किया और जमाअत के बारे में मालूमात जानने का इरादा ज़ाहिर किया। कुछ समय तब्लीग़ हुई उसके बाद उन्होंने अपनी फ़ैमिली सहित बैअत कर ली और अपने गांव में तब्लीग़ शुरू कर दी। उनमें से एक नौजवान इस गांव का चेयरमैन भी है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वहां अहमदियत का पैग़ाम घर-घर पहुंच रहा है और अब तक इस गांव में 82 लोग बैअत कर चुके हैं। तब्लीग़ के दौरान विरोध का सामना भी हुआ। एक दिन "अन्सारुस्सुन्ना" जमाअत का मौलवी आया और लोगों के सामने ऊंची आवाज़ में जमाअत के ख़िलाफ़ बदज़बानी शुरू कर दी। लोगों ने उसे ख़ुद चुप करवाया कि ऐसे शोर शराबा करना मज़हबी रहनुमाओं का काम नहीं। इस पर उसे बाक़ायदा तौर पर इल्मी बेहस और जमाअत अहमदिया की शिक्षाओं पर ग़ौर करने की दावत दी गई। जब तर्कों से लाजवाब हो गया तो फिर बदज़बानी पर उतर आया। जमाअत अहमदिया की अमन वाली शिक्षाओं और इस घटना से प्रभावित हो कर एक बुज़ुर्ग ने अपनी ज़मीन जमाअत को जुमा पढ़ने के लिए और बाजमाअत नमाज़ पढ़ने के लिए दे दी। इस तरह बहुत से ग़ैर अज़ जमाअत बच्चे भी हमारी तर्बीयती क्लासिज़ में शामिल हो रहे हैं। उनका विरोध ही ख़ुद तब्लीग़ का माध्यम बन रहा है।

फ्रांस की एक जमाअत के सदर लिखते हैं कि तोलूस (Toulouse) शहर के सैंटर में लगने वाले इतवार बाज़ार में लीफ़ लेटिंग कर रहे थे कि एक अधेड़ उम्र की औरत आई और मुस्कुराते हुए बताया कि आप लोगों ने मुझे वतन से मुहब्बत और पर्दे के बारे में जो लीफ़ लेट्स दिए थे मैंने उन सब का अध्ययन किया है और मुझे पढ़ कर बहुत अच्छा लगा है। आजकल इन शिक्षाओं की बहुत ज़रूरत है। और यह भी पूछा कि आप लोगों को कितने पैसे मिलते हैं? जब बताया कि हम तो सिर्फ अल्लाह तआला के लिए यह काम कर रहे हैं तो बड़ी प्रभावित हुई।

नुमाइशें , बुक स्टॉलज़ और बिक फेयरज़

क़ुरआन मजीद और जमाअत के लिटरेचर की नुमाइशों का प्रबन्ध किया गया। प्राप्त हुई रिपोर्टों के अनुसार सात हज़ार पाँच सौ चालीस नुमाइशों के द्वारा 3 लाख 43 हज़ार से अधिक लोगों तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा। इस साल सारी दुनिया में 1580 की संख्या में क़ुरआन करीम के विभिन्न अनुवाद तोहफा के रूप में मेहमानों को दिए गए। इसके इलावा 5 हज़ार से अधिक बुक स्टॉलज़ और बुक फेयरज़ के द्वारा 7 लाख 64 हज़ार से अधिक लोगों तक पैग़ाम पहुंचाने की तौफ़ीक़ मिली।

मुबल्लिग़ लेटेविया (Latvia) लिखते हैं कि हमारे बुक स्टॉल पर एक बड़ी उम्र का आदमी आया और स्टॉल के अन्दर आ गया। वहां मेरी तस्वीर के साथ रोल (Roll) चल रहा था और इस पर विभिन्न इस्लामी बातें लिखी हुई थीं। उनको पढ़ता जाता था। इस सकरोल पर पट्टी चल रही थी। फिर हर बात पर उंगली के इशारे से और साथ ही रशियन भाषा में कहता था कि "ज़बरदस्त है और बिल्कुल सही है।" इसी तरह दो औरतें आईं उन्होंने दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन और कुछ दूसरी किताबें लीं और बड़ी प्रशंसा की कि आप लोग बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं।

दिसम्बर 2019 ई में शोबा नूरुल इस्लाम भारत की तरफ़ से एक बुक फेयर में हिस्सा लिया गया। इस में वहां एक बहुत बड़े हिंदू स्कॉलर आचार्य साहिब आए जो मज़हब के बारे में बड़ा व्यापक ज्ञान रखते हैं, स्कूल भी चलाते हैं। और आकर खड़े हो गए और कुछ मिन्टों के बाद क़ुरआन करीम पर एतराज़ कर दिया। कहने लगे क़ुरआन करीम और इस्लाम मुस्लमानों के इलावा समस्त लोगों को क़त्ल करने का हुक्म देता है । उनसे कहा गया कि क़ुरआन करीम आपके सामने है आप बता दें किस जगह पर ऐसा हुक्म है। इस पर कहने लगे कि मैंने सारा क़ुरआन पढ़ा हुआ है और किसी स्थान पर यह हुक्म है इस का इस वक़्त मुझे ज्ञान नहीं है। अत: उनके सामने क़ुरआन करीम की शिक्षाओं और दूसरों के साथ इस्लाम की हुस्ने सुलूक की शिक्षा और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदर्श प्रस्तुत किया गया। कुछ मिन्ट इस्लामी शिक्षाएं सुनने के बाद महोदय कहने लगे कि मैं स्टॉल के अंदर बैठ कर इस्लाम और क़ुरआन के बारे में और अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। अत: महोदय को लगभग दो घंटे तक उनके समस्त सवालों और आरोपों के तसल्ली वाले जवाब दिए गए। इस पर उन्होंने सब के सामने इज़हार किया कि मैंने आज तक ऐसे तसल्ली वाले जवाब नहीं सुने। मैं इस्लाम के बारे में मालूमात हासिल करने के लिए बेशुमार उल्मा के पास गया हूँ और कई स्थानों पर घूमा हूँ परन्तु उल्मा मेरे सवालों के इस तरह जवाब देते थे कि मेरे अंदर इस्लाम और क़ुरआन से हमदर्दी के स्थान पर नफ़रत और ज़हर भरता गया और मेरे अंदर इतनी नफ़रत और ज़हर भर दिया गया कि हम सबने मिलकर यह फ़ैसला किया (उनके जो दोस्त थे)कि इस्लाम के ख़िलाफ़ एक टीवी चैनल खोला जाए। अत: हमने इस बारे में काम शुरू कर दिया और कुछ रिकार्डिंग भी बाक़ायदा तौर पर शुरू कर दी परन्तु अब आप लोगों ने मेरी दुनिया ही बदल दी है। और महोदय बहुत अधिक प्रभावित हुए और जाते हुए वादा करके गए कि मैं आज के बाद इस्लाम और क़ुरआन करीम के विरोध में कुछ नहीं कहूँगा और इस्लाम और क़ुरआन के बारे में जो भी रिकार्डिंग है जो अब तक प्रोग्रामों में मैं ने करवाई है इस को भी प्रसारित नहीं किया जाएगा बल्कि इस्लाम और क़ुरआन की शिक्षा पेश की जाएगी। यह हक़ीक़ी तस्वीर दिखा कर जमाअत अहमदिया दुश्मनों को भी इस्लाम की सुन्दर शिक्षा का क़ायल कर रही है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम और आदर्श की सही समझ दे रही है। और यह तथाकथित उल्मा जो ख़ुद को इस्लाम के ठेकेदार समझते हैं ये दूसरों को इस्लाम से और क़ुरआन करीम से दूर कर रहे हैं और फिर हमारे ख़िलाफ़ ही बातें।

आगरा बुक फेयर के अवसर पर लोकल अख़बार "अगर भारत" के रिपोर्टर हमारे स्टॉल पर आए। उनसे गुफ़्तगु हुई। महोदय ने बेसाख़ता उम्मत की बुरी हालत का इज़हार किया जिस पर उन्हें जमाअत अहमदिया के द्वारा की जाने वाली इस्लामी सेवाओं के बारे में बताया गया तो बहुत प्रभावित हुए और इस काम में हमारी हर प्रकार की सहायता का वादा किया। महोदय ने अपने सम्बन्धों के द्वारा हमारे पैग़ाम को अन्य तीन न्यूज़ चैनल में भी प्रसारित करवाया जिसके द्वारा लाखों लोगों तक जमाअत अहमदिया का पैग़ाम पहुंचा।

आसाम में आयोजिता बुक फेयर के दौरान आफ़ताब अहमद चौधरी जो पी एच डी हैं और हाफ़िज़ क़ुरआन भी हैं उन्हें जमाअत का परिचय कराया गया। विस्तारपूर्वक बात हुई। वार्तालाप के बीच उनको वफ़ात मसीह पर जमाअत के अक़ीदों से परिचित कराया गया। क़ुरआन मजीद से ही वफ़ात मसीह को पेश किया गया। इस पर कहने लगे कि बेशक मैं हाफ़िज़ क़ुरआन हूँ परन्तु मैंने कभी इस तरफ़ ख़्याल भी नहीं किया था। आप लोगों ने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं अख़बारों में भी निबन्ध इत्यादि लिखता हूँ तो अब मैं इन्शा-अल्लाह ये समस्त आयतें हवाला के साथ अख़बारों में प्रकाशति करूँगा चाहे आसाम के समस्त मुसलमान मेरे विरोधी क्यों न हो जाएं।

पीस सम्पोज़ीयम स्विटज़रलैंड के अवसर पर एक पादरी "मिशिल फिशर" साहिब हैं। एक सामाजिक संस्था के प्रमुख हैं। उनको अमन का एक ऐवार्ड दिया गया था। कहने लगे कि मैं जमाअत अहमदिया का ऐवार्ड देने के लिए दिल की गहराई से शुक्रगुज़ार हूँ। मैं हैरान हूँ कि एक मुसलमान जमाअत एक ईसाई संस्था को सामाजिक सेवाओं पर इनाम दे रही है और यह इनाम इस बात का मुँह बोलता सबूत है कि आप सिर्फ अमन की बात नहीं करते बल्कि अमन स्थापित करके दिखा रहे हैं और एक दरख़्त उस के फलों से पहचाना जाता है और जिसका फल आपके यह पीस सिंपोज़ियम हैं।

फिर ज़ेम्बिया के मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि पीस सिंपोज़ियम में विभिन्न जीवन के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल हुए जिनमें पुलिस अफ़्सर, लोकल कोर्ट के जज, विभिन्न चर्चों के पादरी और अन्य प्रतिनिधि थे। स्कूलों के टीचर थे, लोकल मीडिया के प्रतिनिधि थे, मैंबर आफ़ पार्लीमैंट के प्रतिनिधि थे और क़रीबी ग़ैर अज़ जमाअत मस्जिद के मुअल्लिम शामिल थे। तो एक चर्च के पास्टर साहिब ने अपने विचारों का इज़हार किया कि हम काफ़ी समय से ऐसा प्रोग्राम करने का सोच रहे थे परन्तु जमाअत अहमदिया यह प्रोग्राम करके हम पर प्राथमिकता ले गई है।

चन्डीगढ़ में पीस सम्पोज़ीयम के आयोजन पर एक अफ़्ग़ान दोस्त उबैदुल्लाह को जमाअत का परिचय करवाया गया। उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में बताया गया कि आप ने मसीह मौऊद और महदी माहूद होने का दावा किया है जिसकी ख़ुशख़बरी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी। जब

अफ़्ग़ान दोस्त को यह बताया गया और कहा गया कि आप ग़ौर करें और हालात देखें कि क्या यह मसीह और महदी के आने का वक़्त नहीं है? उनका चेहरा लाल हो गया, काँपने लगे और बार-बार यही कहते रहे कि क्या यह सच है कि मसीह मौऊद आ गया है? इसके बाद उनको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान बताई गई तो बेहद भावनात्मक हो कर हमारे अहमदी दोस्त के माथे को चूमा और कहा कि इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा यही है जो आपके द्वारा दुनिया में पेश की जा रही है।

फिनलैंड से वहां के नैशनल सदर साहिब लिखते हैं कि वहां पीस सिंपोज़ियम किया। फ़ौरन मिनिस्ट्री के एक एंबेसेडर और डिप्लोमैट जो पाकिस्तान में फिनलैंड के राजदूत भी रह चुके हैं वह आए। कहते हैं मुझे वास्तम में आपके सम्मान्नीय आयोजन में शामिल हो कर बहुत आन्नद मिल रहा है। मैं पाकिस्तान इस्लामाबाद में 1995 ई से 1998 ई तक रहा हूँ। फिनिश राजदूत का प्रमुख था। मेरे साथ उस समय की शानदार यादें जुड़ी हैं। मेरे और मेरे ख़ानदान के क़रीब तरीन दोस्तों में अहमदिया कम्यूनिटी के बहुत से प्रमुख लोग शामिल हैं। अहमदियों ने इस देश और इस की सीमाओं से बढ़कर इल्म, कलाओं और आर्थिक सफलताओं में बहुत प्रमुख किरदार अदा किया है। जब बर्तानिया ने भारतीय उपमहाद्वीप पर हुकूमत की तो इस सल्तनत के बहुत से प्रसिद्ध शहरी और फ़ौजी शख़्सियात अहमदिया कम्यूनिटी से सम्बन्ध रखते थे। फिर कहते हैं कि मैं इटली में भी राजदूत रहा हूँ। मैं वहां इटली में ट्रेस्ट में स्थित साईंस की तीसरी आलमी अकैडमी से परिचित हुआ जिसका आरम्भ और जिसकी बुनियाद पाकिस्तानी एटमी साईंसदान अब्दुस्सलाम ने रखी थी और नोबेल इनाम हासिल करने वाले किसी भी इस्लामी देश के पहले साईंसदान थे। कहते हैं जब इस नोबेल इनाम की ख़बर फैली तो पाकिस्तान के क़ौमी अख़बारों, रेडियो, टीवी पर बहुत प्रशंसा हुई, बड़ा उनका मान सम्मान हुआ। परन्तु बहुत जल्द जब ये मालूम हो गया कि वह एक अहमदी हैं तो सारी प्रशंसा और प्रसारण रुक गईं। फिर कहते हैं 1996 ई में जब उनका देहान्त हुआ तो उनको पाकिस्तानी पंजाब के शहर रब्वाह में दफ़नाया गया और फिर एक लज्जा की बात यह है कि उनके कतबा पर शब्द "मुसलमान" मिटा दिया गया। बहरहाल उन्होंने प्रसीक्यूशन का सारा वर्णन किया।

बहरहाल आजकल तो इतिहास की किताबें बदली जा रही हैं और बच्चों के ज़हनों से वास्तविक तारीख़ को मिटाया जा रहा है। हम चाहे कुछ कहें या न कहें दुनिया का पढ़ा लिखा वर्ग ख़ुद जानता है कि जमाअत अहमदिया ने पाकिस्तान के लिए क्या सेवाएं दी थीं और उस समय क्या सुलूक अहमदियों के साथ किया जा रहा है। जो पाकिस्तान के बनने के विरोधी थे वही लोग आज उस के तथाकथित संस्थापक बनने की कोशिश कर रहे हैं। बहरहाल हर पाकिस्तानी अहमदी देश का वफ़ादार है, वफ़ादार था और वफ़ादार रहेगा इन्शा अल्लाह तआला। इन विरोधियों की कोशिशें उम्मीद है इन्शा अल्लाह तआला एक दिन हवा में उड़ जाएँगी और अल्लाह तआला का समर्थन इन्शा अल्लाह तआला हमारे साथ होगा और अब भी है। जितना ये कोशिशें कर रहे हैं उस के मुक़ाबले में उनके ख़्याल में तो अब तक जमाअत को ख़त्म कर देना चाहिए था परन्तु अल्लाह तआला ने जमाअत को सँभाला हुआ है।

बहरहाल ये रिपोट की घटनाएं जो मैंने सुनाई हैं यह एक हिस्सा है और जैसा कि मैंने कहा यह रिपोर्ट जलसे के दूसरे दिन वर्णन की जाती है। इस साल क्योंकि जलसा नहीं हो रहा जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ तो मैंने सोचा था कि दो क़िस्तों में इस को वर्णन करुंगा। अत: प्रोग्राम बनाया गया है कि इन्शा अल्लाह तआला इतवार को शाम को चार बजे संक्षिप्त gathering के सामने, श्रोताओं के सामने जलसे की तरह पर यहां हाल में मैं बक़ाया हिस्सा भी वर्णन कर दूँगा। इन्शा अल्लाह और जहां से सारी दुनिया एम टी ए के द्वारा सुन लेगी और उन फजलों का जो इस साल अल्लाह तआला ने जमाअत पर किए उनका वर्णन हो जाएगा।

इस रिपोट में से भी बहरहाल मुझे बहुत सारी घटनाएं निकालनी पड़ी हैं, बातें निकालनी पड़ी हैं तो इन्शा अल्लाह बाक़ी इतवार को पेश करूँगा

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 28 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 11)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

मेहमान नवाज़, मुख़्लिस और नेक औरत थीं। तिलावत क़ुरआन करीम बड़े चाव से करतीं। अलफ़ज़ल और जमाअत की किताबों का नियमित अध्ययन करती थीं। ख़िलाफ़त और ख़ानदान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ मुहब्बत का विशेष सम्बन्ध था। 1976 ई में आप मुहल्ला दारुल एमन वसती रब्वाह की सदर लजना निर्धारित हुईं और लगभग 15 साल सेवा करती रहीं। अपने बच्चों की तर्बीयत भी बहुत उत्तम रंग में की। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में चार बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। आपके बेटे आदरणीय नासिर अहमद महमूद साहिब (नार्वे) और बहू को नुसरत जहां स्कीम के तहत सेरालियून में सेवा की तौफ़ीक़ मिली। दूसरे बेटे आदरणीय ताहिर अहमद मुबश्शिर साहिब(मुरब्बी सिलसिला टाउन शिप में और एक दामाद आदरणीय नेअमतुल्लाह ज़ाएद साहिब मुरब्बी सिलसिला क़सूर में सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। आपका एक नवासा जामिया अहमदिया में शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

(3) आदरणीया रज़ीया बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय मुनव्वर अहमद बट साहिब रब्वाह।)

29 अगस्त 2019 ई को 85 साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत पीर मुहम्मद साहिब रज़ि की पोती थीं। धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखने वाली और सब का ख़्याल रखने वाली एक उत्तम आचरण वाली और हर दिल अज़ीज़ औरत थीं। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में चार बेटियां, छे बेटे और कई पोते पोतियां और नवासे नवासियाँ शामिल हैं। आपके एक पोते आदरणीय सादिक़ अहमद बट साहिब (सिलसिला) तुर्की में और एक नवासे आदरणीय बह्ज़ाद अहमद साहिब (मुरब्बी सिलसिला रब्वह) में सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। एक पोते आदरणीय साग़र अहमद बट साहिब जामिया अहमदिया जर्मनी में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं

(4) आदरणीया ज़ुबैदा बी-बी साहिबा (मुक़तदीपुर ज़िला कटक, इंडिया)

आप 28 मार्च 2019 ई को 48 साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूमा जन्मजात अहमदी थीं। पांचों समय की नमाज़ों की पाबन्द और चन्दों को बाक़ायदगी से अदा करती थीं। मरहूमा का जमाअत के साथ इख़लास का सम्बन्ध था।

(5)आदरणीया अमतुल रशीद बेगम साहिबा(पत्नी आदरणीय मौलवी हमीदुल्लाह ख़ान साहिब मुअल्लिम तालीमुल-क़ुरआन क्लास मस्जिद मुबारक, रब्वाह)

आप 8 जून 2019 ई को 99 साल की उम्र में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के दौर ख़िलाफ़त में अपनी शादी के बाद आप अहमदियत में शामिल हुईं। आपने अपने 9 बच्चों की तर्बीयत के अतिरिक्त घर में बहुत से बच्चों बच्चियों को क़ुरआन करीम की शिक्षा दी। मरहूमा मूसिया थीं।

अल्लाह तआला समस्त मरहूमीन से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए और उन्हें अपने प्यारों के क़ुरब में स्थान दे। अल्लाह तआला उनके पीछे रहने वालों को सब्र जमील प्रदान फरमाए और उनकी ख़ूबियों को ज़िन्दा रखने की तौफ़ीक़ दे। आमीन

आमीन का आयोजन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नीचे लिखे 36 बच्चों से क़ुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय मोमिन अहमद, दानियाल राजा, मसरूर अहमद शेख़, आसिम ख़ान, लुक़्मान मुबश्शिर,अबीर आज़म बुटर , ज़ियान फ़राज़ नाज़, नबील महमूद, वजया अलरहमान, तलहा अकबर जोईआ , सुहराब अहमद ऐवान, सफ़ीर अहमद ऐवान,हसीब अहमद, सय्यद ज़ुलकिफ़ल अहमद, मुर्तज़ा अहमद,शायान अहमद, आहल अहमद, सादिक़ अहमद, कामरान अनवर, फ़ैज़ान नासिर, कामरान अहमद जजा, जलीस अहमद राना, ताबिश अहमद, मलिक सम्मान उल-हक़, फ़रहान अली ऐवान, सुबहान अहमद, अयान अहमद, अलीम अहमद, बासिल अहमद, नूह सिराज अहमद, लब्बैक अहमद, साइम मुनीर, रिज़वान अहमद मिर्ज़ा, शाह ज़ैन मिर्ज़ा, राहील अहमद नाज़, बासिल अहमद

आयोजन आमीन के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव का उद्देश्य

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आगमन का उद्देश्य निम्नलिखित शब्दों में वर्णन फ़रमाया।

(1) वह काम जिसके लिए मुझे मामूर फ़रमाया है वह यह है कि ख़ुदा में और उस की सृष्टि के रिश्ता में जो दूरी आ गई है उसको दूर कर के प्रेम तथा श्रद्धा के सम्बन्ध को पुन: स्थापित करूँ।"

(लैक्चर लाहौर रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 180)

(2) ख़ुदा ने मुझे दुनिया में इस लिए भेजा कि ताकि दया और आचरण और नर्मी से खोए हुए लोगों को ख़ुदा और उसकी पवित्र हिदायतों की तरफ़ खींचूँ और वह नूर जो मुझे दिया गया है इस की रोशनी से लोगों को सीधे रास्ते पर चलाऊं।"

(तिर्याक़ुल क़ुलूब रुहानी ख़ज़ाइन 15 पृष्ठ 143)

(3) ख़ुदा तआला चाहता है कि इन समस्त रूहों को जो ज़मीन की विभिन्न आबादियों में आबाद हैं क्या यूरोप और क्या एशिया उन सबको जो नेक फ़ित्रत रखते हैं तौहीद की तरफ़ खींचे और अपने बंदों को एक धर्म पर जमा करे। यही ख़ुदा तआला का उद्देश्य है जिसके लिए मैं दुनिया में भेजा गया। "

(रिसाला अल-वयीसत रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 307)

(4) यह विनीत तो केवल इस उद्देश्य के लिए भेजा गया है कि ताकि यह सन्देश अल्लाह की सृष्टि को पहुंचा दे कि वर्तमान समय में दुनिया के समस्त मौजूदा धर्मों में से वह मज़हब सच्चाई पर और ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार है, जो क़ुरआन करीम लाया है और मुक्ति के दरवाज़ा में दाख़िल होने का दरवाज़ा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ है।"

(अय्यामुस्सुलह रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 52)

हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की सच्चाई का रोशन सबूत

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े प्यार से फ़रमाया हमारे महदी के लिए दो निशानियां हैं अर्थात हे मुसलमानो जिस इमाम महदी के प्रादुर्भव की मैं ख़बर दे रहा हूँ उस की सच्चाई मालूम करने के लिए तुम्हें दो निशान बताता हूँ।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं।

اِنَّ لِمَهْدِيِّنَا اٰيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَنْكَسِفُ الْقَمَرُ لِاَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَّمَضَانَ وَتَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِيْ النِّصْفِ مِنْهُ۔

(सुनन अद्दार कुत्नी,बाब सिफ़त सलातुल कसूफ़ व ख़ुसूफ)

अनुवाद अर्थात हमारे महदी के लिए दो निशान हैं और जब से कि ज़मीन तथा आसमान ख़ुदा ने पैदा किए ये दो निशान किसी और मामूर और रसूल के समय प्रकट नहीं हुए। उनमें से एक यह है कि महदी माहूद के ज़माना में रमज़ान के महीना में चांद ग्रहण उस की अव्वल रात में होगा अर्थात तेरहवीं तारीख़ में और सूरज का ग्रहँ उस के दिनों में से बीच के दिन होगा। अर्थात उस रमज़ान के महीना की अठाईसवीं तारीख़ को और ऐसी घटना दुनिया के आरम्भ से किसी रसूल या नबी के वक़्त में कभी ज़हूर में नहीं आई केवल महदी माहूद के समय में इस का होना निर्धारित है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के आदेश से चौदहवीं सदी हिजरी के आठवें साल 1308 हिज्री (अनुसार1890 और 1891 ई) में यह ऐलान फ़रमाया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस (दूसरे)मसीह ईसा इब्ने मरियम के आने की ख़बर दी थी वह में ही हूँ।

इसी तरह इज़ाला औहाम की रचना के समय हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम पर यह भी खुला कि हदीसों में मसीह और महदी के आने के बारे में जो भविष्यवाणियां मौजूद हैं उनका मिस्दाक़ एक ही व्यक्ति है जो कुछ गुणों की दृष्टि से मसीह होगा और कुछ गुणों की दृष्टि से महदी होगा।

आपका यह ऐलान करना था कि यह मांग शुरू हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि मसीह तथा महदी के ज़हूर के समय रमज़ान में चांद और सूरज को ग्रहण लगेगा। वह ग्रहण कहाँ है।

इस ऐलान के लगभग तीन साल बाद चौदहवीं सदी के आठवें साल अर्थात दिनांक 13 रमज़ान 1311 हिज्री अनुसार 21 मार्च 1894 ई को चांद को ग्रहण लगा ,और दुनिया ने अपनी आँखों से देख लिया कि अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने "मसीह तथा महदी" की सच्चाई के लिए जिस निशान की पेशगोई फ़रमाई थी बड़ी शान से पूरी हुई।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने इस निशान के ज़ाहिर होने पर फ़रमाया

"सूरज और चांद को रमज़ान में ग्रहण लगना क्या यह मेरी अपनी ताक़त में था कि मैं अपने वक़्त में कर लेता और जिस तरह पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस को सच्चे महदी का निशान क़रार दिया था और ख़ुदा तआला ने इस निशान को मेरे दावा के समय पूरा कर दिया। अगर मैं इस की तरफ़ से नहीं था तो क्या ख़ुदा तआला ने ख़ुद दुनिया को गुमराह किया? उसका सोच कर जवाब देना चाहिए कि मेरे इनकार का प्रभाव कहाँ तक पड़ता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इन्कार और फिर ख़ुदा तआला को झुठलाना अनिवार्य आता है। इसी तरह पर इतने निशान हैं कि उनकी संख्या दो चार नहीं बल्कि हज़ारों लाखों तक है तुम किस-किस का इन्कार करते जाओगे।

(मल्फ़ूज़ात हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम भाग 3 पृष्ठ 652)

अहमदिया मुस्लिम जमाअत की बुनियाद और बैअत की शर्तें।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने चौदहवीं सदी के छटे साल 20 रजब 1306 अनुसार 23 मार्च 1889 को एक जमाअत की बुनियाद रखी जो अहमदिया मुस्लिम जमाअत के नाम से मशहूर है पहले दिन चालीस लोग हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत करके इस जमाअत में शामिल हुए सबसे पहले हज़रत अल्हाज मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ी अल्लाह अन्हो ने आपके हाथ पर बैअत की जिनके बारे में अलीगढ़ तहरीक के संस्थापक सर सय्यद अहमद ख़ान ने कहा था

"जाहिल जब तरक़्क़ी करता है तो पढ़ा लिखा कहलाता है, जब और तरक़्क़ी करता है तो फ़लासफ़ी कहलाता है, फिर तरक़्क़ी करके सूफ़ी बन जाता है, मगर जब सूफ़ी तरक़्क़ी करता है तो नूरुद्दीन बन जाता है। "

(मकतूब सर सय्यद अहमद ख़ान 8 मार्च 1897 उद्धरित अल-हकम अप्रैल 1934 ई)

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने अहमदिया मुस्लिम जमाअत में शामिल होने के लिए दस बैअत की शर्तें निर्धारित फ़रमाईं हैं जो निम्नलिखित हैं।

बैअत की शर्तें

पहली : अव्वल यह कि बैअत करने वाला (अर्थात् जमाअत अहमदिया में दाख़िल होने वाला) सच्चे दिल से इस बात की प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में उस समय तक जब तक कि कब्र में दाख़िल न हो जाये शिर्क (अर्थात् अल्लाह तआला के

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और उसकी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 10 September 2020 Issue No.37

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अतिरिक्त किसी और की इबादत करने) से बचता रहेगा।

दूसरी : यह कि झूठ और व्यभिचार और बुरी नज़र एवं प्रत्येक दुराचार और अत्याचार और ख़यानत (धरोहर में कमी या नुकसान पहुँचाने) और झगड़े और बग़ावत के यत्नों से बचता रहेगा और निषिद्ध (नाजायज़) कामोत्तेजित भावनाओं के समय उनका अधीन नहीं होगा चाहे कैसी भी उत्तेजक भावना पेश आए।

तीसरी : यह कि ख़ुदा और रसूल के आदेशानुसार प्रतिदिन पाँचों समय की नमाज़ अदा करता रहेगा और यथाशक्ति तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने और अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर दरूद भेजने और प्रति दिन अपने गुनाहों की माफी माँगने और क्षमायाचना करने में हमेशा लगा रहेगा और हार्दिक प्रेम से ख़ुदा तआला के उपकारों को याद करके उसकी याद और प्रशंसा करना हमेशा अपना वज़ीफ़ा (जप-तप या नित्य कर्म) बनाएगा।

चौथी : यह कि सम्पूर्ण मानव-समाज को सामान्यत: और मुसलमानों को विशेषत: अपने तामसिक आवेगों (अन्दरूनी जोशों) से किसी प्रकार की नाजायज़ (अनुचित) तकलीफ़ नहीं पहुँचायेगा न ज़बान से, न हाथ से, न ही किसी अन्य प्रकार से।

पाँचवीं : यह कि सुख-दु:ख, अमीरी, ग़रीबी और अच्छी-बुरी प्रत्येक अवस्था में खुदा तआला के साथ वफ़ादारी करेगा और हर हाल में ख़ुदा तआला के फ़ैसले पर राज़ी रहेगा और उसकी राह में हर एक अपमान और दु:ख को स्वीकार करने के लिए हरदम तैयार रहेगा और किसी भी मुसीबत के आने पर उससे मुँह नहीं फेरेगा बल्कि आगे क़दम बढ़ाएगा।

छठवीं : यह कि रूढ़िवादी रस्मो रिवाज और लोभ-लालसा की पैरवी से रूक जायेगा और क़ुर्आन शरीफ़ की हुकूमत को पूर्णत: स्वीकार करेगा और अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों को हर एक राह में अपने काम का तरीक़ा ठहरायेगा।

सातवीं : यह कि अंहकार और अभिमान को पूर्णत: त्याग देगा और विनम्रता एवं ख़ाकसारी (विनीतता) और अच्छे आचरण एवं सहनशीलता और सरल स्वभाव से ज़िन्दगी व्यतीत करेगा।

आठवीं : यह कि धर्म और धर्म के सम्मान और इस्लाम के प्रति हमदर्दी को अपनी जान और अपने माल और अपनी इज़्ज़त (प्रतिष्ठा) और अपनी औलाद, और अपने हर एक रिश्तेदार से अत्याधिक प्रिय समझेगा।

नवीं : यह कि समस्त सृष्टि की हमदर्दी में सिर्फ अल्लाह तआला के लिए लगा रहेगा और जहाँ तक सम्भव हो खुदा की दी हुई ताकतों और नेअमतों से इन्सानों को फ़ायदा पहुँचाएगा।

दसवीं : यह कि इस ख़ाकसार (विनीत) के साथ, सिर्फ ख़ुदा तआला के लिए भाईचारा का सम्बन्ध और मारूफ़ (नैतिक) बातों में पैरवी (अनुसरण) का इक़रार करके उस पर मरते दम तक क़ायम रहेगा और इस भाईचारा में ऐसा उच्चकोटि का नमूना दिखलाएगा कि उसकी उदाहरण दुनिया के रिश्तों एवं संबंधों और सारी ख़ादिमाना (सेवकाना) हालतों में न पाया जाता हो।

(इश्तिहार तक्मीले तब्लीग़ 12 जनवरी सन 1889 ई.)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

आकर अदा कर लें।.....

.....सबसे पहला इन्सान जिसने इस पर अनुकरण किया वह हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं जिन्होंने नजरान के ईसाइयों को अपनी मस्जिद में गिरजा करने की इजाज़त दे दी। ज़ादुल मआद में लिखा है।

لَمَّا قَدِمَ وَفْدُ نَجْرَانَ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلُوْا عَلَيْهِ مَسْجِدَهٗ بَعْدَ الْعَصْرِ فَحَانَتْ صَلَاتُهُمْ فَقَالُوْا اَيُصَلُّوْنَ فِيْ مَسْجِدِهٖ فَاَرَادَ النَّاسُ مَنْعَهُمْ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعُوْهُمْ فَاسْتَقْبَلُوا الْمَشْرِقَ فَصَلَّوْا صَلٰوتَهُمْ

(ज़ादुल मआद, भाग 2 पृष्ठ 35)

अर्थात जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास नजरान का ईसाई वफ़द आया तो वे लोग अस्र के बाद मस्जिद नब्वी में आए और बातचीत करते रहे। बात करते करते उन की इबादत का समय आ गया (शायद वह इतवार का दिन होगा अत: वे वहीं मस्जिद में अपने तरीक़ा के अनुसार इबादत करने के लिए खड़े हो गए। लोगों ने चाहा कि वे उन्हें रोक दें परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐसा मत करो। अत: उन्होंने उसी जगह पूर्व की तरफ़ मुँह किया और अपने तरीक़ा के अनुसार इबादत कर ली।

अत: मस्जिदों में अल्लाह तआला की इबादत से रोकने का किसी को हक़ नहीं। अगर समस्त क़ौमें इस बात पर अनुकरण करने लग जाएं तो समस्त आपसी झगड़े ख़त्म हो जाएं। अगर प्रत्येक क़ौम अपने उपासना स्थल में दूसरों को आने और वहां इबादत और ज़िक्रे इलाही करने की इजाज़त दे दें तो कभी आपस में दूरी और झगड़ा पैदा न हो और दुनिया में हर तरफ़ अमन क़ायम हो जाए। मुस्लमानों का भी फ़र्ज़ है कि वह अपने कर्मों पर ग़ौर करें और सोचें कि क्या वे इस शिक्षा पर पूरी तरह अनुकरण करते हैं जो क़ुरआन करीम देता है। और जिस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण था या उस के ख़िलाफ़ अपने बनाए हुए नियमों पर अनुकरण कर रहे हैं। मैं समझता हूँ कि यह आयत ग़ैर अहमदियों और हम में एक फ़ैसला करने वाली आयत है।

(तफ़सीर कबीर, भाग 2, पृष्ठ 226 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad